सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 93, नई दिल्ली, गुरुवार 12 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 ....100 दिनों की प्रशासनिक दिशा और उपलब्धियां पर प्रकाश डाला गया
06 अपनी गर्मी की छुट्टी को यादगार बनाएं।
08 मुख्यमंत्री ने नए डीसीपी कार्यालय का उद्घाटन किया

दिल्ली परिवहन निगम के अधिकारियों ने लगाया एक बार फिर दिल्ली परिवहन निगम को करोड़ों रुपयों का चूना और आगे भी लगाने की तैयारी में है दिल्ली सरकार के राजस्व को बड़ा चूना

संजय बाटला

नई दिल्ली। जी हां, दिल्ली परिवहन विभाग जो पहले से ही मोटे घाटे में चल रहा है के आला अधिकारी खास तौर से जनरल मैनेजर एंड एम डी बिना सही निर्णय लिए राजस्व को लगवा रहे है बड़ा चूना।

आप जानते ही होंगे दिल्ली में जब कांग्रेस की सरकार थीं तभी डीटीसी के लिए बसे खरीदी थी जिन्हें 15 साल या तो पूरे हो गए या जल्द ही होने वाले है। यानी बसों की लाइफ या तो खत्म हो गई या खत्म होने वाली है और इन सभी बसों को स्क्रैप करवाने के लिए टैंडर प्रक्रिया से भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाहन स्क्रैप डीलरो को स्क्रैप के लिए दिया जा रहा हैं।

अभी तक स्क्रैप में दी गई बसों के पूरे रिकार्ड की जांच करने से पता चला की जनरल मैनेजर डीटीसी और एमडी डीटीसी वाहन स्क्रैप करवाने के लिए जो निर्णय ले रहे हैं उससे डीटीसी को राजस्व में करोड़ों रुपए का नुकसान हो चुका है और विश्वस्त सूत्रों की माने तो आने वाला निर्णय तो एक ही बार में कम से कम 1 करोड़ 35 लाख के आस पास का चूना लगाएगा।

अब प्रश्न यह उठता है की आखिर यह बात जो आम जनता को दिख रही हैं यह दिल्ली के प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली, दिल्ली की मुख्यमंत्री, मंत्री परिवहन और चेयरमैन डीटीसी के अलावा लॉ विभाग दिल्ली और फाइनेंस विभाग दिल्ली को क्यों नहीं दिखाई

दे रहा। यहां पर यह कहना उचित है की देखते और जानते हुए भी सब है चुप।

दिल्ली परिवहन विभाग ने जब भी टैंडर प्रक्रिया में 50 या 50 से कम बसों को स्क्रैप करने का टेंडर जारी किया है तो प्रति बस स्क्रैप मूल्य में डीटीसी को 30000 रुपए से ज्यादा की कीमत अधिक बसों की नीलाम से अधिक प्राप्त हुई है। जब भी टैंडर 200 या 200 से अधिक बसों के स्क्रैप का किया गया है तो प्रति बस की स्क्रैप मूल्य कम बसों के टेंडर में बहुत कम प्राप्त हुई पर उसके बावजूद बसों को स्क्रैप कर दिया गया।

कारणः-

अधिक बसों का टैंडर एक साथ करने पर भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाहन स्क्रैप डीलरो में से कुछ गिने चुने स्क्रैप डीलर ही बोली लगाते हैं और कम कीमत पर बसे खरीद लेते है। जब की कम बसों के स्क्रैप टैंडर किया जाता हैं तो अनगिनत पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर बोली लगाते है और डीटीसी को इससे प्रति बस में 30000 रुपए से अधिक की कीमत राजस्व में प्रति वाहन स्क्रैप करने से अधिक प्राप्त होती है। जब बस की स्क्रैप कीमत अधिक आ सकती हैं तो जनरल मैनेजर डीटीसी और एमडी डीटीसी जान बुझ कर क्यों अधिक बसों का टैंडर निकाल कर सस्ते में बस को स्क्रैप कर घाटे में डूब रहे डीटीसी निगम को और घाटे में डाल रहे हैं।

अभी ताजा मामले में भी ऐसा ही हुआ है की दिल्ली परिवहन निगम के अधिकारियों द्वारा 318 बस को स्क्रैप करने के लिए टैंडर प्रक्रिया करी जिसमें अंतिम और उच्च बोली मात्र 367924 लगी जब की 50 बसों की स्क्रैप में निकले 4 टैंडरो में दिल्ली परिवहन निगम को प्रति बस स्क्रैप मूल्य 410000 प्राप्त हुआ था और 25 बसों के स्क्रैप टैंडर में प्रति बस स्क्रैप मूल्य 452000 प्राप्त हुआ था। *अब आप इस से समझ ही सकते हैं की बसों को स्क्रैप करने में अधिकारी कितना बड़ा झोल करके सरकार की आंखों में धूल झोंक रहे है पर क्यों मामला पूर्ण जांच का बनता है।

सवाल तो बड़ा है पर जवाब भी सिर्फ बड़े ही ले सकते है जो सब कुछ जानते हुए भी चुप हैं, आख़िर क्यों बड़ा सवाल।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में ट्रैफिक नियम तोड़ने वालो की खैर नहीं, 6 महीने में कटे 19 लाख से ज्यादा चालान

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में यातायात नियमों का उल्लंघन बढ़ता जा रहा है जिससे सड़कों पर अराजकता फैल रही है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने इस साल 19 लाख से अधिक चालान काटे हैं जिनमें रेड लाइट जंप और गलत पार्किंग के मामले शामिल हैं। सबसे ज्यादा उल्लंघन दोपहिया वाहन चालक कर रहे हैं। पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने के कारण फुटपाथ और बाजार पार्किंग स्थलों में बदल गए हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली की सड़कों पर यातायात का हाल बेहाल है, यातायात उल्लंघन वाहनों चालकों का शगल बनता जा रहा है। सबसे ज्यादा हो पहिया वाहन चालक नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं। रेड लाइट जंप और गलत पार्किंग भी जमकर हो रही है। अधिकांश फुटपाथ और सर्विस रोड पार्किंग में तब्दील हो चुकी हैं, लोगों का पैदल चलना तक मुश्किल हो गया है।

आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के आंकड़े बताते हैं कि रेड लाइट जंप, गलत पार्किंग और यातायात उल्लंघन के अन्य मामलों में एक जनवरी से अब तक 19 लाख 13 हजार 950 चालान काटे जा चुके हैं। यानी हर महीने यातायात उल्लंघन के 11 हजार 814 चालान।

ट्रैफिक नियम तोड़ने, रेड लाइट जंप में दो पहिया वाहन चालक आगे

गलत पार्किंग के सात लाख से अधिक चालान

रेड लाइट जंप

माह संख्या दो पहिया चार पहिया

जनवरी : 17,236 13,789 3,447

फरवरी : 15, 568 12,454 3,114

मार्च : 22,121 17,784 4,337

अप्रैल : 16, 680 13,344 3,336

मई : 19,142 15,108 4,037

जून : 6,116 4,893 1,223

अन्य उल्लंघन (बिना हेलमेट, बिना सीट बेल्ट, ओवर स्पीड आदि)

माह दो पहिया चार पहिया

जनवरी 77,989 29,971

फरवरी 51,088 26,168

मार्च 57,989 28,973

अप्रैल 69,022 29,038

मई 65,876 27,998

जून 38,641 10,281

ऑनलाइन चालान

माह दो पहिया चार पहिया

जनवरी 94,245 22,694

फरवरी 74,479 20,497

मार्च 98,348 21,878

अप्रैल 87,656 21,962

मई 96,368 23,031

जून 32,474 8,093

गलत पार्किंग चालान

माह दो पहिया चार पहिया

जनवरी 13,407 1,20,664

फरवरी 12,107 1,08,967

मार्च 14,011 1,17,878

अप्रैल 15,063 1,16,779

मई 14,213 1,21,664

जून 4,757 042,818

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक, सबसे ज्यादा गलत पार्किंग के मामले आईजीआई एयरपोर्ट सर्कल में दर्ज किए गए। इसके बाद तिलक नगर, पंजाबी बाग, नजफगढ़, रोहिणी, करोल बाग और सफदरजंग एन्क्लेव में दर्ज किए गए।

फुटपाथों को गैरेज बना दिया, बाजारों की सड़कों को आधा घेर कर पार्किंग बना दी गई है। लाजपतनगर मार्केट इसका प्रमुख उदाहरण है। कनाट प्लेस में भी यह समस्या बनी हुई है।

चालान से नहीं सुधर रहे हालात

2024 में गलत पार्किंग के लिए 16 लाख चालान काटे गए थे और 2025 में यह संख्या बढ़ने की उम्मीद है। जून तक ऐसे चालानों की संख्या सात लाख दो हजार 328 तक पहुंच गई है।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की सख्ती तो बढ़ी पर, हालात नहीं सुधरे। शहर के तमाम व्यवसायिक और आवासीय क्षेत्रों में पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने के कारण सड़क और फुटपाथ अब भी पार्किंन बने हुए हैं। यह स्थिति हर कहीं देखी जा सकती है। ग्रेटर कैलाश, आइटीओ, जंगपुरा, नेहरू प्लेस और पंजाबी बाग जैसे रिहायशी और व्यावसायिक इलाकों में सड़कों पर अवैध पार्किंग का नजारा आम है।

दिल्ली में प्रदूषण फैलाना पड़ेगा ज्यादा महंगा
अब एक जैसा नहीं होगा जुर्माना; बना ये नया फॉर्मूला

दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण फैलाने वाले उद्यमों पर अब एक समान जुर्माना नहीं लगेगा। प्रदूषण का स्तर उद्यम का आकार और उल्लंघन के दिनों के आधार पर जुर्माना तय होगा। केंद्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के निर्देशानुसार अलग-अलग उल्लंघनों के लिए जुर्माने की दरें निर्धारित की गई हैं जिससे छोटे उद्यमों पर कम बोझ पड़ेगा।

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण फैलाने वाले सभी छोटे बड़े उद्यमों- संस्थानों पर अब एक समान जुर्माना नहीं लगेगा। ऐसे सभी इलाकों, जहां प्रदूषण का स्तर ज्यादा रहता है, को चिन्हित कर यह देखा जाएगा कि कौन से उद्यम और संस्थान एक्यूआई बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

उनकी लोकेशन, कुल क्षेत्र, काम के स्केल और सप्ताह या माह भर में वहां कितने दिन कितना प्रदूषण रहा, इस आधार पर जुर्माना राशि तय की जाएगी। इससे छोटे उद्यमों व संस्थानों पर कम बोझ पड़ेगा। जिसका जितने दिन प्रदूषण होगा, उससे उतने ही दिनों का जुर्माना लिया जाएगा।

जानकारी के मुताबिक प्रदूषण के मामलों में पांच आधार पर पर्यावरण क्षति का जुर्माना होगा। केंद्रीय वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के निर्देश के मुताबिक किसी भी उद्यम या संस्थान ने जितने दिन प्रदूषण नियमों का उल्लंघन किया, उन पूरे दिनों का जुर्माना पर्यावरण क्षति में शामिल होगा। इसके अलावा, जुर्माने की राशि तय करने के लिए संबंधित क्षेत्र में प्रदूषण का स्तर, लोकेशन व अन्य आधार को शामिल किया गया है।

सीएक्यूएम द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि संबंधित क्षेत्र में प्रदूषण इंडेक्स, जितने दिनों तक प्रदूषण नियमों का उल्लंघन किया गया, रुपयों में इसकी गणना), किस पैमाने पर उद्यम का संचालन किया गया और उस उद्यम या संस्थान की लोकेशन क्या है, किस उद्यम ने पर्यावरण को कितनी क्षति पहुंचाई है, इत्यादि के आधार पर जुर्माना तय किया जाएगा।

कितना लिया जाएगा जुर्माना

डीजल जनरेटर के इस्तेमाल पर

20 से 125 कि.वा. के डीजल जनरेटर के इस्तेमाल पर प्रतिदिन 7500 रुपये

800 कि.वा. के डीजल जनरेटर के इस्तेमाल पर प्रतिदिन 15000 रुपये

800 कि.वा. के डीजल जनरेटर के इस्तेमाल पर प्रतिदिन 25000 रुपये

डीपीसीसी या राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से पंजीकरण न कराने पर

20000 वर्ग मीटर से बड़ा निर्माण पर 1,00,000 रुपये

20000 वर्ग मीटर से बडे.निर्माण पर 2,00,000 रुपये

वेबपोर्टल पर सेल्फ ऑडिट रिपोर्ट अपलोड न करने पर

20000 वर्ग मीटर तक के निर्माण के लिए 20000 रुपये

20000 वर्ग मीटर से बडे.निर्माण के लिए 40,000

नियमों के अनुसार निर्माण साइटों पर एंटी स्मॉग गन न लगाने पर

हर साइट पर 7500 रुपये प्रतिदिन प्रति साइट

धूल रोकने के उपाय न करने पर

500 वर्ग मीटर तक के निर्माण पर 7500 रुपये प्रतिदिन

500 वर्ग मीटर से बडे.निर्माण पर 15000 रुपये प्रतिदिन

बिल्डिंग मैटीरियल के ट्रांसपोर्टेशन के लिए

उल्लंघन होने पर 7500 रुपये हर मामले के लिए

इसके अलावा बिना औपचारिकता पूरी किए औद्योगिक इकाई शुरू करने, प्रतिबंधित ईंधन का इस्तेमाल करने, धुआं रोकने के मानकों का पालन न करने वाली औद्योगिक इकाइयों के लिए जुर्माने का एक फॉर्मूला सेट किया गया है। यह फॉर्मूला उद्योगों की श्रेणी, इकाई का आकार, कितने दिन नियम तोड़ा के

बौध से पुराने कटक तक जल्द चलेगी रेल, महाप्रबंधक ने किया परियोजना कार्य का निरीक्षण

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पूर्वी तटीय रेलवे के महाप्रबंधक परमेश्वर फंकवाल ने खुर्दा रोड से बलांगीर तक निर्माणाधीन बहुप्रतीक्षित नई रेल लाइन का निरीक्षण किया। महाप्रबंधक सोनपुर की ओर से विशेष निरीक्षण ट्रेन कार में आए और दोपहर करीब डेढ़ बजे बौध रेलवे स्टेशन पहुंचे। उन्होंने प्रस्तावित उद्घाटन के लिए स्टेशन के सामने के मैदान के साथ-साथ बौध कचेरीपड़िया और स्टेडियम का दौरा किया। वे शाम करीब 4 बजे विशेष ट्रेन से बौध स्टेशन से पुराने कटक स्टेशन पहुंचे। रास्ते में उन्होंने पुल संख्या 476 के पास 10 मिनट का निरीक्षण किया और पुराने कटक स्टेशन भवन के साथ-साथ टिकट काउंटर, अन्य हॉल और फ्रंटेज का निरीक्षण किया और निर्माण के प्रभारी मुख्य अभियंता के साथ चर्चा की। महाप्रबंधक ने रेलवे लाइन के काम का निरीक्षण किया और समय पर काम पूरा करने पर जोर दिया। उन्होंने लंबित निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा की और गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को बनाए रखने के कड़े निर्देश दिए। उन्होंने अन्य महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों की समीक्षा की और उन्हें समय सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए। महाप्रबंधक के दौरे के दौरान उनके साथ ईस्ट कोस्ट रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एजी श्रीनिवास, मुख्य अभियंता अजय कुमार सामल, प्रमुख भी थे करीब ढाई महीने बाद आज ईस्ट कोस्ट रेलवे के महाप्रबंधक ने निर्माण कार्य की प्रगति का अंतिम निरीक्षण किया। मुख्य अभियंता अजय कुमार सामल ने बताया कि इसके परिणामस्वरूप बहुत कम समय में सोनपुर की ओर से बौध से ओल्ड कटक तक यात्री ट्रेनें चलने लगेंगी।

बलूचिस्तान के हिंगलाज मंदिर में लगती है भक्तों की भारी भीड़, जानिए मंदिर की मान्यता

अनन्या मिश्रा

हिंगलाज मंदिर 51 पवित्र शक्तिपीठों में से एक है। बलूचिस्तान में स्थित हिंगलाज मंदिर हिंदू धर्म के लिए सबसे पवित्र स्थल है। इस मंदिर में जो भी आकर पूजा करता है, उसके सभी पाप धुल जाते हैं। इस मंदिर को हिंगलाज मंदिर, हिंगुला देवी और नानी मंदिर के नाम से जाना जाता है।

भारत और पाकिस्तान तनाव के बीच बलूचिस्तान की आजादी को लेकर मांग काफी तेज हो गई है। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में सनातन धर्म से जुड़ा हिंगलाज मंदिर है। जो काफी समय से महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान बना हुआ है। इस मंदिर में सबसे ज्यादा बलूचिस्तान के हिंदू आते हैं। बता दें कि हिंगलाज मंदिर 51 पवित्र शक्तिपीठों में से एक है। बलूचिस्तान में स्थित हिंगलाज मंदिर हिंदू धर्म के लिए सबसे पवित्र स्थल है। इस मंदिर में जो भी आकर पूजा करता है, उसके सभी पाप धुल जाते हैं। इस मंदिर को हिंगलाज मंदिर, हिंगुला देवी और नानी मंदिर के नाम से जाना जाता है। तो आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस फेमस मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं।

मंदिर की खासियत

हिंगलाज मंदिर पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित हिंगोल नेशनल पार्क में है। यह मंदिर पाकिस्तान में मौजूद तीन शक्तिपीठों में से एक है। बाकी के दो शक्तिपीठ शिवाहरकराय और शारदा पीठ हैं। हर साल वसंत ऋतु में यहां पाकिस्तान का एक बड़ा हिंदू त्योहार मनाया जाता है। जिसको हिंगलाज यात्रा कहा जाता है। इस यात्रा में करीब 1 लाख से ज्यादा भक्त शामिल होते हैं। इस यात्रा में भक्त सैकड़ों सीढ़ियां चढ़कर प्राचीन मंदिर तक पहुंचते हैं। जोकि हिंगोल नदी के किनारे बसा है। मंदिर पहुंच कर भक्त नारियल और गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ाते हैं। इस दौरान श्रद्धालु हिंगलाज माता के दर्शन कर पाते हैं।

मंदिर का इतिहास

शिव पुराण के मुताबिक प्रजापति दक्ष अपनी बेटी सती के लिए एक अच्छा वर ढूंढ रहे थे। लेकिन सती ने अपने पिता दक्ष की इच्छा के खिलाफ जाकर भगवान शिव को अपने पति के रूप में चुन लिया। जिस कारण प्रजापति दक्ष बहुत नाराज हुए। बाद में उन्होंने एक बड़ा यज्ञ करवाया, जिसमें सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया गया, लेकिन भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया गया।

इस अपमान और क्रोध से मां सती ने खुद को अग्नि में भस्म कर दिया। वहीं जब भगवान शिव को यह पता चला तो उन्होंने सती के वियोग से दुखी होकर उनकी मृत देह लेकर ब्रह्मांड में घूमने लगे। इसके बाद भगवान विष्णु ने मां सती के शरीर पर सुदर्शन चक्र चला दिया और शरीर 108 टुकड़ों में बंट गया।

यह टुकड़े धरती पर 52 जगह गिरे और अन्य ग्रहों पर बिखर गए। जहां-जहां पर माता सती के अंग गिरे, वहां-वहां शक्तिपीठ बने। जोकि आज मां दुर्गा के अलग-अलग रूपों के मंदिर हैं। जहां पर माता सती का सिर गिरा था, वहां पर हिंगलाज मंदिर है।

मंदिर की देखरेख

बता दें कि बलूचिस्तान में मौजूद मां सती के 51 शक्तिपीठों में से एक हिंगलाज मंदिर की देखभाल यहां के स्थानीय लोग यानी बलूच करते हैं। यहां के स्थानीय लोग इस मंदिर को बेहद चमत्कारिक मानते हैं। खूबसूरत पहाड़ियों में यह मंदिर इतने बड़े क्षेत्र में बना है कि देखने वाला हैरान रह जाता है। यह मंदिर आदिकाल से है, लेकिन इसके इतिहास के मुताबिक मंदिर 2000 साल पहले से यही पर स्थापित है। यहां पर पिंडी रूप में एक शिला पर देवी मां का स्वरूप उभरा हुआ है। नवरात्रि के 9 दिनों तक मंदिर में विशेष रूप से पूजा होती है।

गुफा में है मंदिर

हिंगलाज माता मंदिर ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। जहां पर एक गुफा बनी हुई है। इस मंदिर में कोई दरवाजा नहीं है और इसकी परिकर्मा करने के लिए तीर्थयात्री गुफा के रास्ते से आते हैं। वहीं दूसरी ओर से निकल जाते हैं। यहां पर भगवान भोलेनाथ भीमलोचन भैरव के रूप में विराजमान हैं। वहीं मंदिर में कालिका माता की प्रतिमा, ब्रह्मकुंड, श्रीगणेश और तीरकुंड जैसे प्रसिद्ध तीर्थ भी हैं।

कर्नाटक के इस फेमस मंदिर में है चमत्कारी पत्थर, 12वीं सदी में हुआ था इसका निर्माण

अनन्या मिश्रा

कर्नाटक के हसन जिले के चन्नरायपटना तालुक के चिक्कोनहल्ली गांव में अमरागिरि श्री गुड्डा रंगनाथस्वामी मंदिर स्थित है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए आपको हसन या चन्नरायपटना पहुंचना होगा। जोकि रेल मार्ग और सड़क मार्ग से कनेक्टेड है।

अमरागिरि श्री गुड्डा रंगनाथस्वामी मंदिर कर्नाटक के हसन जिले के चन्नरायपेटा तालुक के चिक्कोनहल्ली में है। यह मंदिर 12वीं सदी में बना था और जिसके कारण इसका धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व काफी ज्यादा है। श्री रामानुजाचार्य जो तमिलनाडु से निर्वासित होकर मेलुकोटे आए थे। अपनी यात्रा के दौरान रामानुजाचार्य चिक्कोनहल्ली में रुके थे। इस रात उनको एक खास आध्यात्मिक अनुभव हुआ। अगले दिन रामानुजाचार्य ने गांव वालों को बताया कि यह जगह भगवान विष्णु के लिए पवित्र है।

रामानुजाचार्य ने कहा कि यहां पर श्रीहरि विष्णु की मूर्ति स्थापित की जाए और फिर रोज उनकी पूजा की जाए। ऐसे में रामानुजाचार्य के निर्देश पर गांव वालों ने भगवान राम की धनुष बाण लिए हुए मूर्ति स्थापित की। इसकी नियमित पूजा करनी शुरूकर दी। इस मंदिर की कहानी बेहद दिलचस्प है, उसी तरह यहां पर एक चमत्कारी पत्थर है, जोकि बेहद खास है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस मंदिर और पत्थर के बारे में बताने जा रहे हैं।

ऐसे पहुंचे मंदिर

कर्नाटक के हसन जिले के चन्नरायपटना तालुक के चिक्कोनहल्ली गांव में अमरागिरि श्री गुड्डा रंगनाथस्वामी मंदिर स्थित है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए आपको हसन या चन्नरायपटना पहुंचना होगा। जोकि रेल मार्ग और सड़क मार्ग से कनेक्टेड है। वहीं अगर आप बेंगलुरू से आ रहे हैं, तो आपको करीब 160 किमी की दूरी तय करनी होगी। जिसको आप बस, ट्रेन या फिर कार से 3-4 घंटे में तय कर सकते हैं। चन्नरायपटना या हसन से आप टैक्सी या लोकल गाड़ी की मदद से चिक्कोनहल्ली पहुंच सकते हैं।

मंदिर की कहानी

विदेशी आक्रमणकारियों से मंदिर की सुरक्षा के लिए गांव वाले इसको रंगनाथस्वामी मंदिर कहने लगे। क्योंकि यहां पर आक्रमणकारी रंगनाथ के नाम और पूजा का सम्मान करते थे। वहीं रामानुजाचार्य द्वारा बताए मुताबिक यह मंदिर रंगनाथस्वामी मंदिर के नाम से फेमस हो गया। वहीं शनिवार के दिन मंदिर में दसोहा का आयोजन होता है। राम नवमी पर रथ उत्सव मनाया जाता है। मंदिर के पुजारी के मुताबिक मंदिर की सुरक्षा 'दोनप्पा' नामक एक देवता करते हैं।

पत्थर की खासियत

इस मंदिर की एक खास बात यह है कि यहां पर रामानुजाचार्य का एक छोटा पत्थर है, जिसको वह तकिए की तरह उपयोग में लाते थे। अब मान्यता है कि यदि कोई अपनी मनोकामना लेकर उस पत्थर पर बैठता है, तो यदि मनोकामना पूरी होगी तो पत्थर दाईं ओर झुकेगा और यदि मनोकामना पूरी नहीं होगी तो यह पत्थर बाईं ओर झुकता चलेगा। इस पत्थर को देखकर मंदिर आने वाले भक्त खुद भी हैरान रह जाते हैं। क्योंकि इसके घूमने की स्पीड काफी तेज होती है कि व्यक्ति खुद घूमने लगता है।

मंदिर में क्या करें

बता दें कि हर शनिवार को मंदिर में सामूहिक भोजन कराया जाता है, जिसमें सभी भक्त शामिल हो सकते हैं।

वहीं राम नवमी के शुभ मौके पर मंदिर में भव्य रथ यात्रा निकाली जाती है। ऐसे में आप भी इसमें शामिल होकर धार्मिक और सांस्कृतिक आनंद उठा सकते हैं।

मंदिर का वातावरण बहुत शांत और आध्यात्मिक रहता है। वहीं यहां की हरियाली और पहाड़ों का नजारा आपके मन को सुकून दे सकता है।

मंदिर के पुजारी और यहां के स्थानीय लोग मंदिर के इतिहास और रामानुजाचार्य से जुड़े प्रसंग बताते हैं। ऐसे में आप इस मंदिर से जुड़ी चीजें पूछ सकते हैं।

राष्ट्रीय प्रेम दिवस आज

राष्ट्रीय प्रेम दिवस हर साल 12 जून को मनाया जाता है, जो 1967 के अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के लविंग बनाम वर्जीनिया के फैसले की वर्षगांठ मनाने के लिए मनाया जाता है। इस फैसले ने सोलह अमेरिकी राज्यों में बचे हुए सभी एंटी-मिसजेनेशन कानूनों को रद्द कर दिया। फैसले में कहा गया, ₹ इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि नस्लीय वर्गीकरण के कारण केवल विवाह करने की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करना समान सुरक्षा खंड के केंद्रीय अर्थ का उल्लंघन करता है।

राष्ट्रीय प्रेम दिवस

================

बचपन के दोस्त मिल्ड्रेड और रिचर्ड की मुलाक़ात तब हुई जब वह 11 साल की थी और रिचर्ड 17 साल का था। सालों के दौरान, वे एक-दूसरे से प्यार करने लगे। 1958 में, जब मिल्ड्रेड 18 साल की हुई, तो इस जोड़े ने वाशिंगटन में शादी कर ली और रिचमंड के उत्तर में अपने गृहनगर लौट आए। हालाँकि, दो हफ़्ते बाद, अधिकारियों ने जोड़े को गिरफ़्तार कर लिया। मिल्ड्रेड और रिचर्ड को इस बात का एहसास नहीं था कि वर्जीनिया राज्य अंतरजातीय विवाह को अवैध मानता है। लविंग्स ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और जेल जाने से बचने के लिए वे वर्जीनिया छोड़ने के लिए सहमत हो गए।

वॉशिंगटन डीसी में रहते हुए, लविंग्स ने अटॉर्नी जनरल रॉबर्ट एफ. कैनेडी को पत्र लिखकर कानूनी कार्रवाई शुरू की। कैनेडी ने मामले को अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन को भेज दिया। वॉरेन कोर्ट ने सर्वसम्मति से उनके पक्ष में फैसला सुनाया और लविंग्स अपने वर्जीनिया घर लौट आए, जहाँ वे अपने तीन बच्चों के साथ रहते थे।

राष्ट्रीय प्रेम दिवस का इतिहास

======================

नेशनल लविंग डे जूनटीनथ उत्सव से प्रेरित है। हालाँकि जूनटीनथ गुलामी से मुक्ति को मान्यता देता है, लेकिन यह प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाने और पूर्णता प्राप्त करने के लिए आवश्यक दृढ़ता और गरिमा का भी जश्न मनाता है। इसी तरह, नेशनल लविंग डे अंतरजातीय रिश्तों और अंतरजातीय जोड़ों द्वारा हर दिन सामना की जाने वाली कठिनाइयों का जश्न मनाता है। हालाँकि नेशनल लविंग डे को अभी तक अमेरिकी सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता नहीं दी गई है, लेकिन एक आंदोलन का उद्देश्य सरकार को ऐसा करने के लिए राजी करना है।

महाभारत की ये अद्भुत महिलाएं, जिनके आगे नहीं चलती थी किसी की भी!

महाभारत में या महाभारत काल में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। इस काल में महिलाएं जितनी स्वतंत्र थीं उतनी ही परतंत्र भी थी। संपूर्ण महाभारत में महिलाओं की स्थिति कैसी भी रही हो लेकिन उन्होंने कई मौकों अपनी जिद या ज्ञान के आगे बड़े बड़े महारथियों को झुका दिया था। आओ जानते हैं ऐसी ही कुछ महिलाओं के बारे में।

सत्यवती महाभारत की शुरुआत राजा शांतनु की दूसरी पत्नी सत्यवती से होती है। सत्यवती के बारे में पढ़ने पर पता चलता है कि यह एक ऐसी महिला थीं जिसके कारण भीष्म को ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा लेनी पड़ी। कहते हैं कि सत्यवती ही एक प्रमुख कारण थी जिसके चलते हस्तिनापुर की गद्दी से कुरुवंश नष्ट हो गया। यदि भीष्म सौगंध नहीं खाते तो सत्यवती के पराशर से उत्पन्न पुत्र वेदव्यास के 3 पुत्र पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर हस्तिनापुर के शासक नहीं होते या यह कहें कि उनका जन्म ही नहीं होता। तब इतिहास ही कुछ और होता।

गांधारी सत्यवती के बाद यदि राजकाज में किसी का दखल था तो वह थी धृतराष्ट्र की पत्नीं गांधारी। कहते हैं कि गांधारी का विवाह भीष्म ने जबरदस्ती धृतराष्ट से करवाकर उसके संपूर्ण परिवार को बंधक बनाकर रखा था। गांधारी के लिए यह सबसे दुखदायी बात थी। गांधारी के लिए आंखों पर पट्टी बांधने का एक कारण यह भी था। धृतराष्ट्र आंखों से ही नहीं, मन से भी अंधों की भांति व्यवहार करते थे इसलिए गांधारी और उनके भाई शकुनि को अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता संभालनी पड़ी। गांधारी को यह चिंता सताने लगी थी कि कहीं कुंती के पुत्र सिंहासनारूढ़ न हो जाए। ऐसे में शकुनि ने दुर्योधन के भीतर पांडवों के प्रति घृणा का भाव भर दिया था। हालांकि यह भी कहा जाता था कि शकुनि भीष्म, धृतराष्ट्र आदि से बदला लेना चाहता था इसीलिए उसने यह षड़यंत्र रचा था। गांधारी ने ही अपनी शक्ति के बल पर दुर्योधन के अंग को वज्र के समान बना दिया था। लेकिन श्रीकृष्ण की चतुराई के चलते उसकी जंघा वैसी की वैसी ही रह गई थी। क्योंकि श्रीकृष्ण ने कहा था कि मांग के समक्ष नग्न अवस्था में जाना पाप है। गांधारी मानती थी कि श्रीकृष्ण के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ और उन्हीं के कारण मेरे सारे पुत्र मारे गए। तभी तो गांधारी ने भगवान श्रीकृष्ण को उनके कुल का नाश होने का श्राप दिया था।

कुंती गांधारी के बाद कुंती महाभारत के पटल पर एक शक्तिशाली महिला बनकर हस्तिनापुर में प्रवेश करती है। कुंती और माद्री दोनों ही पांडु की पत्नियां थीं। यदि पांडु को शाप नहीं लगता तो उनका कोई पुत्र होता, जो गद्दी पर बैठता लेकिन ऐसा नहीं हुआ। तब पांडु के आग्रह पर कुंती ने एक-एक कर कई देवताओं का आवाहन किया। इस प्रकार माद्री ने भी देवताओं का आवाहन किया। तब कुंती को तीन और माद्री को दो पुत्र प्राप्त हुए जिनमें युधिष्ठिर सबसे ज्येष्ठ थे। कुंती के अन्य पुत्र थे भीम और अर्जुन तथा माद्री के पुत्र थे नकुल व सहदेव। कुंती ने धर्मराज, वायु एवं इन्द्र देवता का आवाहन किया था तो माद्री ने अश्विन कुमारों का। इससे पहले कुंति ने विवाहपूर्व सूर्य का आह्वान कर कर्ण को जन्म दिया था और उसे एक नदी में बहा दिया था। एक शाप के चलते जब पांडु का देहांत हो गया तो माद्री पांडु की मृत्यु बर्दाश्त नहीं कर सकी और उनके साथ सती हो गई। ऐसे में कुंति अकेली पांच पुत्रों के साथ जंगल में रह गए। अब उसके सामने भविष्य की चुनौतियां थी। ऐसे में कुंति ने मायके की सुरक्षित जगह पर जाने के बजाय ससुराल की असुरक्षित जगह को चुना। पांच पुत्रों के भविष्य और पालन पोषण के निमित्त उसने हस्तिनापुर का रुख गया, जोकि उसके जीवन का एक बहुत ही कठिन निर्णय और समय था। कुंति ने वहां पहुंचकर अपने पति पांडु के सभी हितेशियों से संपर्क कर उनका समर्थन जुटाया। सभी के सहयोग से कुंति आखिरकार राजमहल में अपनी जगह बनाने में कामयाब हो गई। कुंति और समर्थकों के कहने पर धृतराष्ट्र और गांधारी को पांडवों को पांडु का पुत्र मानना पड़ा। राजमहल में कुंती का सामना गांधारी से भी हुआ। कुंती वसुदेवजी की बहन और भगवान श्रीकृष्ण की बुआ थीं, तो गांधारी गंधार नरेश की पुत्री और राजा धृतराष्ट्र की पत्नी थी।

द्रौपदी सत्यवती, गांधारी और कुंति के बाद यदि किसी का नंबर आता है तो वह थीं पांच पांडवों की पत्नी द्रौपदी। द्रौपदी के लिए पांचों पांडवों के साथ विवाह करना बहुत कठिन निर्णय था। सामाजिक परंपरा के विरुद्ध उसने यह किया और दुनिया के समक्ष एक नया उदाहण ही नहीं रखा बल्कि उसने अपना सम्मान भी प्राप्त किया और खुद की छवि को पवित्र भी बनाए रखा। द्रौपदी की कथा और व्यथा पर कई उपन्यास लिखे जा चुके हैं।

द्रौपदी को इस महाभारत युद्ध का सबसे बड़ा कारण माना जाता है। द्रौपदी ने ही दुर्योधन को इंद्रप्रस्थ में कहा था, 'अंधे का पुत्र भी अंधा।' बस यही बात दुर्योधन के दिल में तीर की तरह धंस गई थी। यही कारण था कि द्यूतकीड़ा में उनसे शकुनी के साथ मिलकर पांडवों को द्रौपदी को दांव पर लगाने के लिए राजी कर लिया था। द्यूतकीड़ा या जुए के इस खेल ने ही महाभारत के युद्ध की भूमिका लिख दी थी जहां द्रौपदी का चिरहरण हुआ था।

सुभद्रा सुभद्रा तो कृष्ण की बहन थी जिसने कृष्ण के मित्र अर्जुन से विवाह किया था, जबकि बलराम चाहते थे कि सुभद्रा का विवाह कौरव कुल में हो। बलराम के हठ के चलते ही तो कृष्ण ने सुभद्रा का अर्जुन के हाथों हरण करवा दिया था। बाद में द्वारका में सुभद्रा के साथ अर्जुन का विवाह विधिपूर्वक संपन्न हुआ। विवाह के बाद वे 1 वर्ष तक द्वारका में रहे और शेष समय पुष्कर क्षेत्र में व्यतीत किया। 12 वर्ष पूरे होने पर वे सुभद्रा के साथ इन्द्रप्रस्थ लौट आए।

लक्ष्मणा श्रीकृष्ण की 8 पत्नियों में एक जाम्बवती थीं। जाम्बवती-कृष्ण के पुत्र का नाम साम्ब था। साम्ब का दिल दुर्योधन-भानुमती की पुत्री लक्ष्मणा पर आ गया था और वे दोनों प्रेम करने लगे थे। दुर्योधन के पुत्र का नाम लक्ष्मण था और पुत्री का नाम लक्ष्मणा। दुर्योधन अपनी पुत्री का विवाह श्रीकृष्ण के पुत्र से नहीं करना चाहता था।

भानुमती सुदक्षिण की बहन और दुर्योधन की पत्नी थी। इसलिए एक दिन साम्ब ने लक्ष्मणा से प्रेम विवाह कर लिया और लक्ष्मणा को अपने रथ में बैठाकर द्वारिका ले जाने लगा। जब यह बात कौरवों को पता चली तो कौरव अपनी पूरी सेना लेकर साम्ब से युद्ध करने आ पहुंचे। कौरवों ने साम्ब को बंदी बना लिया। इसके बाद जब श्रीकृष्ण और बलराम को पता चला, तब बलराम हस्तिनापुर पहुंच गए। बलराम ने कौरवों से निवेदनपूर्वक कहा कि साम्ब को मुक्त कर उसे लक्ष्मणा के साथ विदा कर दें, लेकिन कौरवों ने बलराम की बात नहीं मानी। तब बलराम ने अपना रौद्र रूप प्रकट कर दिया। वे अपने हल से ही हस्तिनापुर की संपूर्ण धरती को खींचकर गंगा में डुबोने चल पड़े। यह देखकर कौरव भयभीत हो गए। संपूर्ण हस्तिनापुर में हाहाकार मच गया। सभी ने बलराम से माफी मांगी और तब साम्ब को लक्ष्मणा के साथ विदा कर दिया। द्वारिका में साम्ब और लक्ष्मणा का वैदिक रीति से विवाह संपन्न हुआ।

सत्यभामा सत्यभामा भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी थीं। राजा सत्राजित की पुत्री श्रीकृष्ण की 3 महारानियों में से 1 बनीं। सत्यभामा के पुत्र का नाम भानु था। सत्यभामा को एक और जहां अपने सुंदर होने और श्रेष्ठ घराने की राजकुमारी होने का घमंड था वहीं देवमाता अदिति से उनको चिरयौवन का वरदान मिला था जिसके चलते वह और भी अहंकारी हो चली थी।

महाभारत में उसका चरित्र इसीलिए उभरकर सामने आते है क्योंकि वह राजकार्य और राजनीति में रुचि लेती थी। नरकासुर के वध के पश्चात एक बार श्रीकृष्ण स्वर्ग गए और वहां इन्द्र ने उन्हें पारिजात का पुष्प भेंट किया। वह पुष्प श्रीकृष्ण ने देवी रुक्मिणी को दे दिया। देवी सत्यभामा को देवलोक से देवमाता अदिति ने चिरयौवन का आशीर्वाद दिया था। तभी नारदजी आए और सत्यभामा को पारिजात पुष्प के बारे में बताया कि उस पुष्प के प्रभाव से देवी रुक्मिणी भी चिरयौवन हो गई हैं। यह जान सत्यभामा क्रोधित हो गईं और श्रीकृष्ण से पारिजात वृक्ष लेने की जिद्द करने लगी थी। इस तरह सत्यभामा के कई किस्से प्रचलित है। सत्यभामा का घमंड अनुमानजी ने तोड़ा था।

अन्य महिलाएं भीम पत्नीं हिडिम्बा, दुर्योधन पत्नी भानुमति, अर्जुन की पत्नी उलूपी, श्रीकृष्ण की पत्नी जाम्बवन्ती और सत्यभामा अदि अनेक महिलाऐं थी जिनका महाभारत में उल्लेख मिलता है। प्रत्येक महिला में अद्भुत खुबियां थीं।

खांसी (Cough) के घरेलू नुस्खे

1. हरेक प्रकार की खांसी के उपचार के लिए आवश्यक है कि कुछ दिनों के लिए धूम्रपान बंद कर दिया जाए | धूम्रपान से श्वास नली में जलन पैदा होती है और रोग बढ़ता है |
2. खांसी या बलगम वाले रोगियों को पानी या अन्य तरल पदार्थों को गरम करके सेवन करना चाहिए | इससे गले को आराम मिलता है |

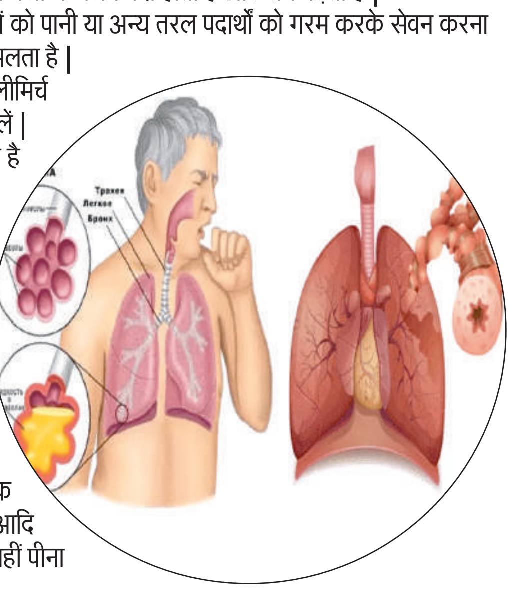

3. नीबू काटकर नमक और कालीमिर्च भरकर उसे हल्का-सा गर्म कर लें | उसे चूसने से खांसी में लाभ होता है |
4. सूखी खांसी में, सूखे आंवले को उसकी गुठली निकालकर हरा धनिया मिलाकर चटनी के रूप में धीरे-धीरे चाटने से भी आराम मिलता है और कफ निकलने लगता है |
5. सूखी खांसी में अंगूरों का किसी भी रूप में सेवन करने से फेफड़ों को शक्ति मिलती है | कफ बाहर निकलने लगता है | अंगूर आदि रसदार फल खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए |
6. सूखी खांसी में पालक का रस निकालकर उसे हल्का-सा गर्म करके गरारे करने से भी लाभ होता है |
7. चार-पांच काली मिर्च और चुटकी भर सोंठ के चूर्ण में एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह-शाम चाटने से कफयुक्त खांसी में आराम मिलता है |
8. 10 ग्राम भुनी हुई फिटकरी तथा 100 ग्राम देसी खांड को बारीक पीसकर आपस में मिला लें | इससे दवाई की 14 खुराक बन जाती हैं | सूखी खांसी में रात को सोते समय एक खुराक गरम दूध से लें |
9. पके हुए सेब के रस से सूखी खांसी में आराम मिलता है | रस में मिश्री मिलाकर प्रात:काल पीने से पुरानी खांसी भी ठीक हो जाती है | कम-से-कम 10-12 दिनों तक इसका लगातार प्रयोग करना चाहिए |
10. इसके अतिरिक्त प्रतिदिन 250 ग्राम सेब का गूदा भी खाया जा सकता है |

आज की रात आसमान में दिखेगा रहस्यमयी 'स्ट्रॉबेरी मून', फिर 2043 तक नहीं दिखेगा ऐसा नजारा

आकाशदर्शियों के लिए 11 जून 2025 की रात बेहद खास होने वाली है. आज की रात आसमान में दिखेगा रहस्यमयी 'स्ट्रॉबेरी मून', फिर 2043 तक नहीं दिखेगा ऐसा नजारा. जून माह की आखिरी पूर्णिमा को रात में स्ट्रॉबेरी मून दिखेगा. इस साल यह एक माइक्रो मून भी होगा, जो पृथ्वी से थोड़ा अधिक दूर होने के कारण सामान्य से थोड़ा छोटा और धुंधला भी दिखाई देगा. इस बार का स्ट्रॉबेरी मून सिर्फ नाम या रंग की वजह से नहीं, बल्कि इसके 'माइक्रो मून' और 'मेजर लूनर स्टैंडस्टिल' की वजह से भी बेहद खास है. हालांकि, इसका रंग स्ट्रॉबेरी जैसा नहीं होता, लेकिन इसका नाम अमेरिकी आदिवासी परंपराओं से जुड़ा है, जहां जून में स्ट्रॉबेरी की कटाई की शुरुआत इसी पूर्णिमा के बाद होती थी. इस वर्ष चंद्रमा पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर होगा, जिसके कारण यह सामान्य से छोटा और नीचा दिखेगा. यह स्थिति हर 18.6 साल में एक बार आती है और अगली बार ऐसा चांद 2043 में ही नजर आएगा. भारत में स्ट्रॉबेरी मून को सूर्यास्त के बाद दक्षिण-पूर्व दिशा में देखा जा सकता है. दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु जैसे शहरों में यह दृश्य रात 7 बजे के बाद दिखाई देगा.

एक तरफ भाजपा घर तोड़कर दिल्ली से यूपी-बिहार वालों को भगा रही है और दूसरी तरफ बिहार में वोट मांग रही- आतिशी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। गरीब विरोधी भाजपा ने आखिरकार कालकाजी विधानसभा स्थित भूमिहीन कैंप की झुग्गियों को तोड़ दिया। बुधवार को सुबह 5 बजे ही भारी पुलिस बल के साथ भाजपा के बुल्डोजर भूमिहीन कैंप पहुंच कर अपनी बर्बरता दिखाने लगे और यहां रह रहे लोग अपनी आंखों के सामने अपने आशियाने को टूटते हुए देखने को मजबूर थे। इस दौरान भूमिहीन कैंप पहुंची स्थानीय विधायक और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने बेघर हुए गरीबों से मिलने के बाद ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि गरीब विरोधी भाजपा गरीबों का घर उजाड़ रही है। जबकि सीएम रेखा गुप्ता ने कहा था कि दिल्ली में एक भी झुग्गी नहीं टूटेगी। भूमिहीन कैंप को लेकर बुधवार को सुबह 11 बजे कोर्ट में सुनवाई थी, लेकिन उससे पहले ही भाजपा की सरकार ने इन झुग्गियों पर बुल्डोजर चलवा दिया।

आतिशी ने कहा कि भाजपा एक गरीब विरोधी पार्टी है। तीन दिन पहले दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दावा किया था कि एक भी झुग्गी नहीं तोड़ी जाएगी और न ही किसी गरीब के घर को छुआ जाएगा। इसके बावजूद, भारी पुलिस फोर्स की मौजूदगी में भूमिहीन कैंप को पूरी तरह खत्म कर दिया गया। हजारों लोग अब सड़क पर आ गए हैं। सीएम रेखा गुप्ता कहती हैं कि कोर्ट का आदेश हैं, लेकिन कोर्ट से यह आदेश भाजपा की डीडीए और दिल्ली सरकार लेकर आई है।

आतिशी ने कहा कि जब गरीब झुग्गीवाले कोर्ट गए, तो भाजपा की डीडीए, दिल्ली सरकार और डूसिब ने कोर्ट में उनका विरोध किया। इन संस्थाओं ने कोर्ट में खड़े होकर कहा कि गरीबों को घर नहीं दिए जाएंगे और उनकी झुग्गियां तोड़ दी जाएं। यह बिल्कुल साफ है कि भाजपा एक गरीब विरोधी पार्टी है। बुधवार को 11 बजे कोर्ट में इस मामले को लेकर सुनवाई है, लेकिन उससे पहले ही सारी झुग्गियां और गरीबों के घर तोड़ दिए गए। भाजपा पिछले 100 दिनों से सत्ता में है और उसका हर कदम गरीब विरोधी रहा है। इन 100 दिनों में बिजली की कीमतों में वृद्धि हो गई, प्राइवेट स्कूलों की फीस में बढ़ोतरी हुई, गरीबों के घर तोड़ टूट रहे हैं और पानी की कीमतों में भी वृद्धि होने वाली है।

उन्होंने पूछा कि क्या भाजपा दिल्ली से झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले यूपी, बिहार और पूर्वांचल के लोगों को भगाना चाहती है? क्या भाजपा पूरी दिल्ली से गरीबों को साफ करना चाहती है? लग तो ऐसी ही रहा है। जहां-जहां गरीब रहते हैं, वहां उनके घर तोड़ने, उन्हें दिल्ली से भगाने और यूपी-बिहार वापस भेजने का इरादा भाजपा का है। बिहार में चुनाव नजदीक हैं और भाजपा वहां वोट मांग रही है, लेकिन दिल्ली में यूपी-बिहार के लोगों के घर तोड़कर उन्हें सड़क पर ला रही है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में 100 दिनों की प्रशासनिक दिशा और उपलब्धियां पर प्रकाश डाला गया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : भाजपा जिला कार्यालय, शाहदरा, दिल्ली पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत भाजपा शाहदरा जिला एवं मयूर विहार जिला के संयुक्त तत्वावधान में 1 विज्ञान लोक शाहदरा जिला भाजपा कार्यालय में एक व्यापक संवाद एवं प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। इस संवाद का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 11 गौरवशाली वर्षों की विकास यात्रा तथा दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में प्रारंभिक 100 दिनों की प्रशासनिक दिशा और उपलब्धियों पर प्रकाश डालना था।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, केंद्रीय राज्य मंत्री एवं सांसद हर्ष मल्होत्रा ने अपने व्यापक वक्तव्य में केंद्र सरकार की 11 वर्षों की यात्रा को "संकल्प से सिद्धि" तक की ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 के बाद से देश ने जितनी तेज़ी से परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाए हैं, वह आज़ादी के बाद के किसी भी कालखंड में अभूतपूर्व है। उन्होंने विशेष रूप से गरीब कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, कृषि सुधार, डिजिटल क्रांति, अधोसंरचना विकास और भारत की वैश्विक छवि में आए बदलाव को रेखांकित किया।

मल्होत्रा ने जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन, आयुष्मान भारत, स्किल इंडिया, डिजिटल इंडिया, सड़क और रेल नेटवर्क विस्तार, PM आवास योजना जैसी दर्जनों योजनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि यह सिर्फ घोषणाएं नहीं रहीं, बल्कि ज़मीनी स्तर पर करोड़ों भारतीयों के जीवन में ठोस बदलाव लेकर आई हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत ने कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी का जिस तरह आत्मनिर्भर दृष्टिकोण से सामना किया, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व का उदाहरण है।

अपने भाषण में मल्होत्रा ने हाल ही में भारतीय सेना द्वारा संचालित "ऑपरेशन सिंदूर" का उल्लेख करते हुए उसे राष्ट्रीय सुरक्षा, सामरिक योजना और सरकार की इच्छाशक्ति का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि यह अभियान न केवल एक सैन्य उपलब्धि है, बल्कि देशवासियों के मन में गर्व, आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति की भावना को भी सशक्त करता है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि भारत अब केवल एक राष्ट्र नहीं बल्कि एक प्रेरणा बन चुका है, जो वैश्विक मंचों पर नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है, विशेषकर सफल G-20 अध्यक्षता इसका उदाहरण है। हर्ष मल्होत्रा ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने पिछले 11 वर्षों में वह कर दिखाया है जो वर्षों से सिर्फ फाइलों में अटका हुआ था। राम मंदिर निर्माण से लेकर आर्टिकल 370 हटाने तक, जो कभी असंभव माना गया, उसे संभव बनाया गया है।

इस अवसर पर दिल्ली विधानसभा में भाजपा विधायक एवं मुख्य सचेतक अभय वर्मा ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सरकार के पहले 100 दिनों की दिशा को जनता के प्रति समर्पित और कार्यदक्ष बताया। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई प्रणाली को जिस पारदर्शिता के साथ लागू किया गया है, वह स्वागत योग्य है। साथ ही उन्होंने नगर निगम, पीडब्ल्यूडी और जल बोर्ड जैसे विभागों के साथ समन्वय को बेहतर करने की दिशा में हो रहे कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह सरकार जनता की प्राथमिकताओं को समझती है और ज़मीनी समाधान देने में विश्वास रखती है।

संवाद कार्यक्रम में भाजपा दिल्ली प्रदेश के वरिष्ठ पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। डॉ. अनिल गुप्ता (प्रदेश प्रवक्ता व जिला प्रभारी) योगिता सिंह (मयूर विहार जिला प्रभारी) दीपक गाबा (अध्यक्ष, भाजपा शाहदरा जिला) और विजेन्द्र धामा (अध्यक्ष, भाजपा मयूर विहार जिला), सारिका जैन प्रदेश मंत्री, नरेश वशिष्ठ जिला सह प्रभारी ने संयुक्त रूप से इस कार्यक्रम के उद्देश्य, विषय और भावी दिशा की जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि दोनों जिलों में भाजपा कार्यकर्ता निरंतर जनता के बीच सक्रिय हैं और सरकार की योजनाओं को अंतिम लाभार्थी तक पहुँचाने के लिए समर्पित हैं।

इस संवाद में कई विधायकों ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया। इनमें ओ. पी. शर्मा (विश्वास नगर), अनिल गोयल (कृष्णा नगर), संजय गोयल (शाहदरा), रविंद्र सिंह नेगी (पटपरगंज), रवीकान्त उज्जैनवाल (त्रिलोक पूरी) शामिल रहे। सभी विधायकों ने अपने-अपने क्षेत्र में जनता के मुद्दों और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर अनुभव साझा किए और पार्टी के प्रति जनविश्वास को दोहराया।

कार्यक्रम के अंत में यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि सिर्फ चुनावी राजनीति नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की दीर्घकालिक दृष्टि से कार्य करता है। केंद्र और दिल्ली सरकार, दोनों की कार्यशैली में पारदर्शिता, सेवा भावना और नवाचार की स्पष्ट झलक मिलती है। जनता का विश्वास ही भाजपा की सबसे बड़ी प्रेरणा है, और यह विश्वास दिन-ब-दिन सशक्त होता जा रहा है।

दिल्ली की भाजपा सरकार पूरी तरह से अपनी नैतिकता खो चुकी है : सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश सौरभ भारद्वाज ने मीडिया के माध्यम से दिल्ली की भाजपा सरकार से प्रश्न पूछते हुए कहा, कि यदि यह ऑर्डिनेंस दिल्ली के अभिभावकों के भले के लिए है तो इसे छुपाया क्यों जा रहा है? उन्होंने कहा केवल दो अखबारों में चोरी छिपे खबर प्लांट कराई गई और उसमें भी ऑर्डिनेंस के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी गई। उन्होंने सवाल पूछते हुए कहा कि आखिर ऐसा क्या डर है, कि भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली सरकार इस ऑर्डिनेंस को छिपा रही है? सौरभ भारद्वाज ने कहा कि अखबार में छपी खबर के हिसाब से भी यह ऑर्डिनेंस पूरी तरह से प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों के खिलाफ है और प्राइवेट स्कूल लॉबी के पक्ष में है। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि 1973 में केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून है, उसमें भी प्रावधान है और सुप्रीम कोर्ट ने भी इस संबंध में कहा है, कि यदि फीस बढ़ोतरी के संबंध में किसी प्रकार की कोई कार्यवाही करनी है तो पहले शिक्षा विभाग से अनुमति लेनी होगी, परंतु आपने इस बात को भी दरकिनार कर दिया।

सौरभ भारद्वाज ने कहा भाजपा शासित दिल्ली सरकार अपनी नैतिकता को चुकी है। उन्होंने कहा कि पहले भी हमने कई बड़ी प्रेस वार्ता के माध्यम से इस बात को बताया था, कि किस प्रकार से प्राइवेट स्कूलों की संगठन के बड़े पदाधिकारी भारतीय जनता पार्टी के चुनाव प्रचार में लगे हुए थे। वह चाहते थे की दिल्ली में भाजपा की सरकार बने ताकि भाजपा की सरकार के सहारे प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन अपनी मनमानी चला सके। कानून से जुड़ी एक और अहम बात पत्रकारों के साथ साझा करते हुए सौरभ भारद्वाज ने बताया, कि इस कानून में लिखा है यदि कोई स्कूल, फीस रेगुलेशन कमेटी द्वारा तय की गई फीस से अधिक फीस मांगेगा तो उस पर 50000 रुपए का जुर्माना किया जाएगा। सौरभ भारद्वाज ने कहा की फीस रेगुलेशन कमेटी के अंदर पांच सदस्य तो स्कूल प्रशासन के ही है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा मान लीजिए यदि फीस रेगुलेशन कमेटी ने स्कूल की फीस 1 लाख से बढ़कर 195000 कर दी तो स्कूल प्रशासन 195000 से अधिक क्यों मांगेगा? इस प्रकार से स्कूल पर कभी भी जुर्माना लगेगा ही नहीं और अभिभावकों की जेब पर 95000 रुपए का अतिरिक्त फीस का भार भी बढ़ जाएगा।

इस संबंध में एक और महत्वपूर्ण बिंदु पर रोशनी डालते हुए सौरभ भारद्वाज ने पत्रकारों को बताया, कि इसमें एक प्रावधान और किया गया है, कि यदि कोई अभिभावक बढ़ी हुई फीस से खुश नहीं है तो वह इसके खिलाफ फीस रेगुलेशन कमेटी के समक्ष अपील कर सकता है। परंतु उसके लिए 15% अभिभावकों की सहमति उसे लेनी होगी। अब प्रश्न यह उठता है, कि यदि स्कूल में 3000 बच्चे पढ़ते हैं तो 15% का मतलब है लगभग 450 अभिभावक। अब कोई व्यक्ति इन साढे चार सौ अभिभावकों को कहां से ढूंढेगा, कहां से उनका पता निकलेगा, कहां-कहां जाकर उनकी सहमति लेकर आएगा, कौन व्यक्ति 450 लोगों के घर-घर जाकर एप्लीकेशन पर हस्ताक्षर कराएगा। उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रावधान जानबूझकर किए गए हैं, ताकि कोई अभिभावक उनकी पूर्ति न कर सके। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि जानबूझकर पूरा का पूरा कानून स्कूल प्रशासन के पक्ष में बनाया गया है और दिल्ली की मिडिल क्लास वर्ग को मूर्ख बनाने का काम इस बिल में किया गया है। उन्होंने कहा भाजपा की दिल्ली सरकार इस बात को भली भांति जानती है। यही कारण है कि सरकार इस बिल को सदन में लेकर नहीं आई। सरकार चर्चा से भाग रही है, क्योंकि सरकार की नियत में खोट है।

2000 करोड़ के क्लासरूम घोटाले में एसीबी ने मनीष सिसोदिया फिर भेजा नोटिस, 20 जून को पेश होने के लिए कहा

दिल्ली सरकार के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया से क्लासरूम घोटाले में एसीबी 20 जून को पूछताछ करेगी। उन्हें दूसरा नोटिस भेजा गया है। एसीबी ने दो हजार करोड़ के क्लासरूम घोटाले में केस दर्ज किया है। जरूरत पड़ने पर पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन के सामने बैठाकर पूछताछ की जाएगी।

नई दिल्ली: दो हजार करोड़ से अधिक के क्लासरूम घोटाला मामले में पूर्ववर्ती दिल्ली सरकार में उप मुख्यमंत्री व शिक्षा मंत्री रहे मनीष सिसोदिया से अब 20 जून को पूछताछ होगी। एसीबी ने उन्हें जांच में शामिल होने के लिए दूसरी बार नोटिस भेजा है। पहले उन्हें बीते नौ जून को जांच में शामिल होने के लिए नोटिस भेजा गया था, लेकिन वे जांच में शामिल नहीं हो पाए थे।

उन्होंने ईमेल के जरिये एसीबी को सूचित किया कि एक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम की वजह से वह पेश नहीं हो पाए। इसके बाद उनकी उपलब्धता के बारे में जानने के बाद एसीबी ने उन्हें दूसरी बार 20 जून के लिए नोटिस भेजा है।

छह जून को पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन से की गई थी पूछताछ

छह जून को पूछताछ में पूर्ववर्ती दिल्ली सरकार में पीडब्ल्यूडी मंत्री रहे सत्येंद्र जैन ने क्लासरूम बनाने के बारे में कई फैसले शिक्षा विभाग के होने और कैबिनेट का निर्णय बताया था। लेकिन इस बारे में उन्होंने एसीबी के समक्ष कोई साक्ष्य नहीं पेश कर पाए थे। इसलिए सिसोदिया से एसीबी सत्येंद्र जैन द्वारा दिए गए जवाब के बाबत भी पूछताछ कर सकती है।

एसीबी चीफ संयुक्त आयुक्त मधुर वर्मा का कहना है कि सिसोदिया से पूछताछ करने के बाद सत्येंद्र जैन से दोबारा पूछताछ की जाएगी। जरूरत पड़ने पर दोनों पूर्व मंत्रियों को एक साथ बुलाकर उन्हें आमना-सामना बैठाकर पूछताछ की जाएगी।

एसीबी ने दोनों नेताओं के खिलाफ सरकारी स्कूलों में 12,748 कक्षाओं के निर्माण में दो हजार करोड़ से अधिक के घोटाले को लेकर करीब ढ़ाई माह पहले केस दर्ज किया था।

आरोप है कि इन दोनों नेताओं के मंत्री रहने के दौरान क्लासरूम के निर्माण के लिए बढ़ी हुई दरों पर ठेके दिए गए थे। प्रत्येक कक्षा का निर्माण 24.86 लाख रुपये में किया गया, जो सामान्य लागत से करीब पांच गुना अधिक है।

पांच लाख रुपये का क्लासरूम 25 लाख में बनवाया गया

यही नहीं, इनमें से अधिकतर ठेके आप से जुड़े ठेकेदारों को दिए गए थे। 2019 में एसीबी को सरकारी स्कूलों में 2,892 करोड़ रुपये की लागत से 12,748 कक्षाओं के निर्माण में भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतें प्राप्त हुई थीं।

दिए गए टेंडर के अनुसार, एक क्लास रूम के निर्माण की एकमुश्त लागत लगभग 24.86 लाख रुपये बताया गया, जबकि दिल्ली में ऐसे कमरे आमतौर पर लगभग पांच लाख रुपये में बनाए जा सकते हैं।

इसमें अर्ध-स्थायी निर्माण किया गया, जिनकी जीवन अवधि 30 वर्ष है, लेकिन लागत आरसीसी के स्थायी निर्माण के बराबर थी, जो आमतौर पर 75 वर्षों तक चलते हैं।

मैरिको लिमिटेड के सफोला ने लॉन्च किया डुअल सीड कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। सफोला के दिल की सेहत के अनुभव को साथ लेकर, मैरिको सिंगल और डुअल सीड वाले कोल्ड प्रेस्ड तेलों की एक नई रेंज पेश कर रहा है।

भारत की अग्रणी एफएमसीजी कंपनी मैरिको लिमिटेड ने कोल्ड प्रेस्ड ऑयल्स सेगमेंट में नई सफोला कोल्ड प्रेस्ड ऑयल्स रेंज की लॉन्चिग के साथ अपनी शुरुआत की घोषणा की।

स्वस्थ जीवनशैली और दिल की सेहत के लिए जाना जाने वाला स्थापित ब्रांड सफोला अब डुअल सीड कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्स लेकर आया है- जिसमें दो अलग-अलग बीजों के पोषण को एक साथ जोड़ा गया है, ताकि खाना पकाने के लिए सोच-समझकर जोड़ी गई सामग्री के साथ पोषण संबंधी लाभ भी मिले। यानि रोज़ाना के पकवान न सिर्फ़ स्वादिष्ट हों, बल्कि सेहतमंद भी बनें।

यह लॉन्च सफोला ऑयल्स पोर्टफोलियो के रणनीतिक विस्तार का हिस्सा है, जो भारतीय परिवारों को रसोई में स्मार्ट, दिल की सेहत के लिए जरुरी विकल्प चुनने में मदद करने के लिए ब्रांड की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।

दिल की सेहत को बेहतर बनाने में पिछले पांच दशकों से भरोसेमंद, सफोला की कोल्ड प्रेस्ड ऑयल्स श्रेणी में शुरुआत इसकी विशेषज्ञता का स्वाभाविक विस्तार है।

कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्स की इस समय मांग बढ़ रही है क्योंकि इन्हें कम तापमान पर निकाला जाता है, जिससे इनका असली स्वाद, खुशबू और पोषण बना रहता है, जो रोज़मर्रा के खाने को पौष्टिक बनाता है।

बहु-स्रोत खाद्य तेल (मल्टी-सोर्स ऑयल्स) में अपने अनुभव का फायदा उठाते हुए, सफोला सिंगल और डुअल सीड दोनों ही तरह के कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्स वैरिएंट बाजार में उतारे है।

नई सफोला कोल्ड प्रेस्ड ऑयल्स रेंज अपने सिंगल सीड और डुअल सीड विकल्पों के साथ नवाचार और प्रामाणिक स्वाद का संतुलित मेल प्रदान करती हैः

x डुअल सीड कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्सः मूंगफली और तिल तथा मूंगफली और कुसुम का मिश्रण- जो समृद्ध स्वाद से भरपूर है और इनमें फैटी एसिड्स का बैलेंस भी बना रहता है।

x सिंगल सीड कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्सः 100 फीसदी मूंगफली, 100 फीसदी तिल और 100 फीसदी सरसों – यानि ये तेल आवश्यक फैटी एसिड से भरपूर है और बीज का असली स्वाद और पोषण देते हैं।

इन सभी तेलों का स्वाद बनाए रखने के लिए कोल्ड-प्रेस्ड तकनीक से बनाया गया है, जिससे इनमें मौजूद मोनोअनसैचुरेटेड (एमयूएफए) और पॉलीअनसैचुरेटेड (पीयूएफए) फैटी एसिड्स संतुलित मात्रा में बने रहते हैं। इससे रोज़ाना के पकवानों को लंबे समय तक सेहतमंद जीवनशैली से जोड़ेने, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण में मददगार ज़रूरी पोषक तत्व भी मिल सकते है।

इस मौके पर मैरिको लिमिटेड के सीईओ (इंडिया कोर बिजनेस), आशीष गोपाल ने कहा, ₹भारत में कोल्ड-प्रेस्ड ऑयल्स की मांग लगातार बढ़ रही है। हमने इसमें एक ऐसा विकल्प पेश किया है जो न सिर्फ अलग है, बल्कि सोच-समझकर बनाया गया है। सफोला में, हम भारतीय परिवारों की बदलती खान-पान की आदतों और पोषण संबंधी प्राथमिकताओं को समझते हैं।

सफोला की मजबूत हृदय स्वास्थ्य से जुड़ी पहचान के साथ, हम आज के उपभोक्ताओं को वही देते हैं जिसकी उन्हें जरूरत है — असलीपन, फायदेमंद गुण और भरोसेमंद गुणवत्ता।यह केवल पोर्टफोलियो का विस्तार नहीं है, बल्कि एक ऐसे भविष्य की ओर कदम है जहाँ निवारक स्वास्थ्य की शुरुआत रसोई में रोज़मर्रा के चुनावों से होती है।"

फनवे लर्निंग एनजीओ ने अध्यापिका का मनाया धूमधाम से जन्मदिन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। फनवे लर्निंग एनजीओ की डायरेक्टर गुरजीत कौर एवम्-फ्ल्यूएल की टीचर्स परविंदर, अमरजीत, अमरप्रीत, नीलम, कवलजीत, कवल जीत सेठी द्वारा अध्यापिका बुलबुल वोहरा का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया। अध्यापिका बुलबुल वोहरा फन वे लर्निंग एनजीओ में पढ़ने आने वाले बच्चों को बिना पारिश्रमिक लिए पिछले कई वर्षों से पढ़ा रही हैं। यहां की डायरेक्टर के साथ अन्य सभी अध्यापिकाओं और बच्चों ने मिलकर बुलबुल वोहरा के जन्मदिन पर खुशियां मनाई।

सोशल मीडिया बच्चों को हिंसक एवं बीमार बना रहा है

ललित गर्ग

स्मार्टफोन बड़ों ही नहीं, बच्चों के हाथ में आ गया है। जवान और बूढ़े ही नहीं छोटे-छोटे बच्चे तक इसके आदी होते जा रहे हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, गेम्स सब कुछ स्मार्टफोन पर होने की वजह से बच्चों और युवाओं में इसकी आदत अब धीरे-धीरे लत में तब्दील होती जा रही है।

सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग से बच्चों का बचपन न केवल प्रभावित हो रहा है, बल्कि बीमार, हिंसक एवं आपराधिक भी हो रहा है। यह चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। यह बच्चों को समय के प्रति, परिवार एव सामाजिक कौशल के प्रति और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। सोशल मीडिया ने बच्चों से बाल-सुलभ क्रीड़ाएं ही नहीं छीनी बल्कि दादी-नानी की कहानियों से भी वंचित कर दिया है। कुछ विशेषज्ञ इस बात से चिंतित हैं कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से बच्चे अनैतिक, उग्र, जिद्दी एवं आक्रामक भी हो रहे हैं, जो उन्हें चिंता और अवसाद में धकेल रहे हैं। बच्चें सोशल मीडिया पर वक्त ज्यादा गुजार रहे हैं, ऑनलाइन गेम्स ने बच्चों की दुनिया ही बदल दी है। अब ये आवाज उठने लगी है कि क्यों न बच्चों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग को प्रतिबंधित कर देना चाहिए? टेन के हार्परकॉलिन्स और नीलसन आईक्यू की एक अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट में ऐसे ही चिन्ताजक तथ्य सामने आये हैं कि बड़ी संख्या में युवा माता-पिता कहानियों की बजाय डिजिटल मनोरंजन को प्राथमिकता दे रहे हैं। पंचतंत्र से लेकर स्नो व्हाइट पिनोकियो जैसी कहानियां अब शेल्फ पर धूल फांक रही हैं। नये बन रहे समाज एवं परिवार में सोशल मीडिया जहर घोल रहा है।

स्मार्टफोन बड़ों ही नहीं, बच्चों के हाथ में आ गया है। जवान और बूढ़े ही नहीं छोटे-छोटे बच्चे तक इसके आदी होते जा रहे हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, गेम्स सब कुछ स्मार्टफोन पर होने की वजह से बच्चों और युवाओं में इसकी आदत अब धीरे-धीरे लत में तब्दील होती जा रही है। सोने के समय बच्चों को कहानियां सुनाना या उनके लिए लोरियां गाना कभी पारिवारिक संस्कृति का अहम हिस्सा हुआ करता था। दादी-नानी हों या माता-पिता की सुनाई गई परीकथाएं बच्चों के लिए नींद से पहले की सबसे प्यारी यादें होती थीं। लेकिन अब सोशल मीडिया के आने से इसके बिना बचपन सूना हो रहा है। बच्चे किताबों और खेलकूद के मैदानों से दूर हो रहे हैं। स्क्रीन की नीली रोशनी उनकी आंखों के साथ दिमागी सेहत पर भी बुरा असर डाल रही है। इसके अलावा शारीरिक श्रम एवं रचनात्मकता भी कम हो गई है। यह केवल पश्चिमी देशों की ही नहीं, भारत की भी सच्चाई बन चुकी है। जेन जेड यानी 1996 से 2010 के बीच जन्मे युवा माता-पिता अब इस प्यारी परंपरा से मुंह मोड़ रहे हैं। हालिया शोधों से पता चला है कि अब कहानियां पढ़ना-सुनाना जेन जेड माता-पिता के लिए जिम्मेदारी एवं मनोरंजन नहीं बल्कि एक थकाऊ काम बन गया है। मोबाइल अब केवल बच्चों के लिए ही समस्या नहीं है, बल्कि बड़े भी इसकी चपेट में हैं। यह सिर्फ फोन या मैसेज करने तक ही सीमित नहीं रहा है। ना जाने कितने ही तरह के ऐप्स, व्हाट्सएप, फेसबुक जैसी सोशल मीडिया एप, और गेम्स बड़ो एवं बच्चों को दिन भर व्यस्त रखते हैं। लेकिन अगर मोबाइल के बिना आपको बेचैनी होती है तो समझ जाइये कि आप भी इस एडिक्शन के शिकार होते जा रहे हैं जो आपके लिए चिन्ता की बात है।

टेन के हार्परकॉलिन्स और नीलसन आईक्यू की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में खासकर महानगरों और शहरी इलाकों में सोशल मीडिया का बच्चों में प्रचलन अधिक बढ़ रहा है। पढ़ने को मनोरंजन एवं ज्ञान का हिस्सा मानने की बजाय 'गंभीर पढ़ाई' से जोड़कर देखा जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक नई पीढ़ी के अभिभावकों को लगता है कि बच्चों को कहानी सुनाना एक अतिरिक्त जिम्मेदारी है। शहरीकरण एवं पारिवारिक संरचना में बदलते स्वरूप से पिछले दस सालों में बड़े बदलाव हुए हैं, संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवार हैं, जहां दादी-नानी जैसे कहानी सुनाने वाले सदस्य मौजूद नहीं है। समय की कमी, कामकाजी जीवन की व्यस्तता और थकान के कारण माता-पिता के पास बच्चों को कहानी सुनाने का समय नहीं बचता। नई पीढ़ी के माता-पिता खुद ही पढ़ने की आदत से दूर हो चुके हैं, जिससे बच्चों को प्रेरणा नहीं मिलती। स्कूल का होमवर्क भी इसमें बड़ी बाधा है। रिपोर्ट के आंकडों के अनुसार 41 प्रतिशत माता-पिता ही रोज अपने चार साल तक के बच्चों को कहानी सुनाते हैं। जबकि 2012 में यह आंकड़ा 64 प्रतिशत था। 28 प्रतिशत जेन जेड माता-पिता पढ़ने को एक मजेदार गतिविधि नहीं मानते।

बच्चों की सोशल मीडिया चैनल्स पर उपस्थिति उन्हें वास्तविक जीवन से दूर करके वर्चुअल दुनिया में ले जा रही है। जहां दिखावटीपन एवं नकारात्मकता की भरमार है। इससे बच्चों का बचपन तो छिन ही रहा है, उनका मानसिक एवं शारीरिक विकास भी अवरुद्ध हो रहा है। सोशल मीडिया यानी यूट्यूब-इंस्टा, अन्य सोशल साइट की लत बच्चों को वास्तविक दुनिया से दूर कर रही है और उनकी एकाग्रता, याददाश्त और ध्यान की क्षमता को कम करके उन्हें अपंग, बीमार एवं हिंसक बना रही है। बच्चे अपने प्रश्नों का हल या समस्या का निवारण किताबों में ढूँढकर पढ़ने के बजाय केवल मोबाइल पर ढूँढने के आदी होते जा रहे हैं जो उचित नहीं है। मोबाइल और साइबर एडिक्शन अब एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है जो बच्चों की दिनचर्या पर बुरा असर डाल रही है। इससे मानसिक विचलन और चिड़चिड़ापन बढ़ता जा रहा है कि हम छोटी छोटी बातों पर घर-परिवार के सदस्यों पर गुस्सा करने लग गये हैं।

मोबाइल आपके बच्चे से उसका बचपन ही नहीं छीन रहा है बल्कि उसे हिंसक भी बना रहा है। हरियाणा में 9 साल के एक बच्चे को इसकी इतनी बुरी लत थी कि उसने स्मार्टफोन छीने जाने की वजह से अपना हाथ काटने की कोशिश की। मोबाइल की लत का ये इकलौता मामला नहीं है। 12 साल का अविनाश मोबाइल के बिना एक पल नहीं रह सकता। उससे अगर मोबाइल छीन लिया जाये तो वो गुस्से में आ जाता है। ऐसी ही लत है भोपाल यूनिवर्सिटी की प्रिया को। उसे व्हाट्सऐप की ऐसी लत लगी कि वह पूरी रात जगी रह जाती है। अब वह इस लत से छुटकारा पाने के लिए मानसिक अस्पताल में काउन्सलिंग ले रही है। मोबाइल की लत से बच्चे आपराधिक भी होते जा रहे हैं और गलत कदम तक उठा रहे हैं। अभी हाल ही में ग्रेटर नोएडा में एक 16 वर्षीय लड़के ने अपनी माँ और बहन की हत्या कर दी क्योंकि बहन ने शिकायत कर दी थी कि भाई दिन भर मोबाइल फोन पर खतरनाक गेम खेलता रहता है और इसलिए माँ ने बेटे की पिटाई की, उसे डाँटा और उसका मोबाइल छीन लिया। मोबाइल पर मारधाड़ वाले गेम खेलते रहने के आदी लड़के का गुस्सा इसी से बढ़ गया। इसी तरह कुछ महीनों पहले कोटा में एक 16 वर्षीय किशोर ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस की जाँच पड़ताल में पता चला कि बच्चे को पबजी गेम खेलने की लत थी और दिनभर मोबाइल में गेम खेलता रहता था। जब घरवालों ने मोबाइल छीन लिया और देने से मना कर दिया तो यह गलत कदम उठा लिया। देश में बड़े अस्पतालों में मोबाइल की लत के शिकार लोगों के इलाज के लिए खास क्लीनिक हैं। और यहाँ आने वाले मरीजों की संख्या जिनमें बच्चें बहुतायत में हैं, अब दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। मोबाइल और एप बनाने वाली कम्पनियाँ अपने मुनाफे के लिए कितनी अमानवीय हो गयी हैं कि यह सब जानते हुए भी लोगों को मानसिक रोग के गड्ढे में धकेल रही हैं। वे नये-नये गेम बनाकर मुनाफा बटोर रही हैं। परिवार एवं समाज में जागरूकता अभियान के साथ सरकार को इस उभर रहे बड़े संकट पर ध्यान देना होगा। बच्चों को खेल, कला, संगीत और अन्य गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जानकारी दें और उन्हें साइबर अपराधों से बचने के तरीके सिखाएं। बच्चों को सोशल मीडिया का उपयोग करने के बारे में सही जानकारी देना और उन्हें इसके नकारात्मक प्रभावों से बचाना जरूरी है।

जलवायु परिवर्तन की वजह से 10 सालों में खाद्य कीमतों में दोगुने की बढ़ोतरी, नींद पर भी संकट

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन धरती का तापमान बढ़ा रहा है. इससे सिर्फ पर्यावरण में बदलाव ही नहीं आ रहे हैं, बल्कि मानव का सामान्य जीवन में भी परिवर्तन आना तय बताया जा रहा है. एक तरफ जहां जलवायु परिवर्तन से कृषि संकट बढ़ रहा है तो वहीं मानव शरीर में इसका असर देखा जाना है. जलवायु परिवर्तन यानी क्लाइमेट चेंज का सामना दुनियाभर की आबादी कर रही है. इस वजह से बाढ़, तूफान के साथ ही तापमान में बढ़ोतरी की वजह से असहनीय गर्मी मुख्य रही है. जलवायु परिवर्तन की ये चुनौतियां सिर्फ पर्यावरणीय ही नहीं है. इसका मानव जीवन पर व्यापक असर पड़ना तय माना जा रहा है. कुल जमा वैज्ञानिक मान रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन की वजह से मानव को आर्थिक के साथ ही शारिरिक नुकसान होना तय है. जलवायु परिवर्तन की वजह से एक तरफ जहां फूड प्रोडक्ट यानी खाद्य पदार्थों के दामों में दोगुने तक की भी बढ़ोतरी होगी तो वहीं जलवायु परिवर्तन मानव की नींद का भी बड़ा दुश्मन बन सकता है. आइए समझते हैं कि पूरा मामला क्या है. 2035 तक दोगुने होंगे फूड प्रोडक्ट के दाम जलवायु परिवर्तन की वजह से तापमान में बढ़ोतरी हो रही है. इस वजह से कृषि संकट गहराया है और इस वजह से खाद्य पदार्थों के दामों में बढ़ोतरी हुई है. इस संबंध में यूरोपिय सेंट्रल बैंक के जलवायु परिवर्तन से दुनिया भर में बढ़ती महंगाई के आंकड़ों का विश्लेषण किया है. आंकड़ों के बाद बैंक ने अनुमान लगाया है कि 2035 यानी अभी से 10 साल बाद गर्म तापमान की वजह से मंहगाई में 0.5 से 1.2 फीसदी की दर से वार्षिक बढ़ोतरी होगी. जबकि खाद्य कीमतों के दामों में दोगुनी की बढ़ोतरी दर्ज की जा सकती है.जलवायु परिवर्तन की वजह से नींद का संकट जलवायु परिवर्तन की वजह से तापमान में बढ़ोतरी होती है, जो भोजन के बाद किसी मनुष्य के लिए आवश्यक नींद के लिए बड़ा संकट पैदा कर रही है. हालांकि हम तापमान को कम करने के लिए एयरकंडीशनर चला रहे हैं, लेकिन उसके बाद भी रात में बढ़ता तापमान हमारी नींद में खलल डाल रहा है.

इसको लेकर चीन की फुडन यूनिवर्सिटी ने लोगों की नींद के डेटा का विश्लेषण किया है. जिसके तहत यूनिवर्सिटी के रिसर्चर ने लोगों की नींद के 20 मिलियन से अधिक में रातों की निगरानी की. जिसमें पाया गया है कि अगर किसी रात तापमान में 10 डिग्री की बढ़ोतरी होती है तो लोगों की भरपूर नींद ना लेने की संभावनाएं 20 फीसदी तक बढ़ जाती हैं. रिसर्चर ने अनुमान लगाया है कि तापमान में बढ़ोतरी के कारण इस सदी के अंत तक चीन में प्रत्येक व्यक्ति प्रति वर्ष लगभग 33 घंटे की नींद खो सकता है.

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस 12 जून 2025-आओ बच्चों को मज़दूरी नहीं शिक्षा दिलाएं जो सामाजिक आर्थिक राजनीतिक शैक्षणिक क्षेत्रों का सशक्त उपकरण व रोजगार का अस्त्र है

बच्चे हर देश के सुनहरे भविष्य की नींव है,आओ उन्हें मज़दूर नहीं शिक्षित बनाएं

भारत में बाल श्रम रोकने में श्रम विभाग,बाल संरक्षण विभाग, पोलिस,मानव तस्करी विरोधी विभाग, बाल अधिकार आयोग, की सक्रियता में कमी का संज्ञान पीएम को लेना ज़रूरी-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक रूप से यह देखा गया है कि अनेक कमर्शियल संस्थानों, औद्योगिक संस्थानों, दवा उद्योग, खेत खलियानों गृहउद्योग, इत्यादि अनेक व्यवसायिक क्षेत्रों में छोटे-छोटे बच्चों से श्रम करवाया जाता है, क्योंकि उन क्षेत्रों में कामों के लिए यह छोटे-छोटे बच्चे आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं और अपेक्षाकृत रोजी या मजदूरी भी इनकी कम होती है, और डेली वेजेस के रूप में रखकर आसानी से अपना काम करवा लेते हैं। दूसरी तरफ हम अनेक चौराहों, बाजारों, हाट बाजारों, में हमने छोटे-छोटे बच्चों को अकेले या अपने मातापिता के साथ खिलौने, खाद्य पदार्थों इत्यादि बेचने को देखते रहते हैं।अनेक बड़ी या छोटी सिटीओ में तो ट्रैफ़िक सिग्नल चौराहों स्टेशनों, बूथों पर अक्सर यह छोटे बच्चे भीख मांगते, सामान बेचते, हमें दिखते रहते हैं। यह नज़ारा हर छोटी बड़ी सिटी के चौराहों पर आसानी से देखने को मिलता है। जबकि संयुक्त राष्ट्र बाल श्रम उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित करते हुए कहा कि 2025 तक इस प्रथा को समाप्त करने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए तत्काल कार्रवाई कीआवश्यकता है। आज इस विषय पर हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 12 जून 2025 को बाल श्रम निषेध दिवस मनाया जा रहा है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, विश्व बाल श्रम निषेध दिवस 12 जून 2025-बच्चों को मजदूरी नहीं शिक्षा दिलाएं जो सामाजिक आर्थिक राजनीतिक शैक्षणिक क्षेत्रों का सशक्त उपकरण व रोजगार का अस्त्र है।

साथियों बात अगर हम 2025 तक बाल श्रम के सभी रूपों को समाप्त करने के लक्ष्य की करें तो, विश्व बाल श्रम निषेध दिवस, जिसे हर साल 12 जून को मनाया जाता है, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आइएलओ) द्वारा बाल शोषण के गंभीर मुद्दे को उजागर करने और इसे मिटाने के प्रयासों को संगठित करनेके लिए शुरू की गई एक वैश्विक पहल है। विश्व बाल श्रम निषेध दिवस 2025 और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यह आइएलओ और यूनिसेफ़ द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किए गए बाल श्रम पर नए वैश्विक अनुमानों और रुझानों के जारी होने के साथ मेल खाता है।यह महत्वपूर्ण डेटा वैश्विक नीतिगत बहसों का मार्गदर्शन करेगा और सतत विकास लक्ष्य लक्ष्य 8.7 को प्राप्त करनेकी दिशामें प्रयासों को फिर से सक्रिय करेगा।2025 तक सभी रूपों में बाल श्रम को समाप्त करने का एक लक्ष्य रखा गया है।संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार, सभी देशों को 2025 तक बाल श्रम को समाप्त करने का लक्ष्य दिया गया है। यह लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 8.7 में शामिल है, जो सभी रूपों में बाल श्रम को समाप्त करने के लिए तत्काल और प्रभावी उपाय करने का आह्वान करता है।कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशनबाल अधिकारों पर लगातार काम कर रहा है फांडेशन की ओर से बाल मजदूरी पर एक जानकारी दी गई है, इसमें बाल मजदूरी से संबंधित कई जानकारी दी गई है, जनगणना 2011 के डेटा के अनुसार, भारत में बाल मजदूरों की संख्या 1.01 करोड़ (10.1 मिलियन) है, इसमें से 0.560 करोड़ (5.6 मिलियन) लड़के और 0.45 करोड़ (4.5 मिलियन) लड़कियां हैं, वहीं हाल के वैश्विक अनुमान के अनुसार 2020 की शुरुआत में वैश्विक स्तरपर 16 करोड़ (160 मिलियन) बच्चे- 6.300 करोड़ (63 मिलियन) लड़कियां और 9.700 करोड़ (97 मिलियन) लड़के - बाल श्रम में थे, जो दुनिया भर में सभी बच्चों में से लगभग 10 में से 1 है, भारत भर में बाल मजदूर कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों जैसे ईंट भट्टों, कालीन बुनाई, परिधान निर्माण, घरेलू सेवा, खाद्य भोजनालयों, गन्ना खेतों, मत्स्य पालन और खनन में पाए जा सकते हैं. बच्चों को यौन शोषण और बाल पोर्नोग्राफी के उत्पादन सहित कई अन्य प्रकार के शोषण का भी खतरा है।

साथियों बात अगर हम भारत में बाल श्रम को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों की करें तो, भारत में बाल श्रम उन्मूलन के लिए, बाल श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना (एनसीएलपी) जैसी नीतियां और योजनाएं शुरू की गई हैं। बाल श्रम (निषेध और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2016 ने बाल श्रम के खिलाफ कानूनी ढांचे को मजबूत किया है। बाल श्रम उन्मूलन के लिए की गई प्रमुख पहलें:बाल श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986:यह अधिनियम 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी भी व्यवसाय में काम करने से रोकता है, और 18 वर्ष से कम आयु के किशोरों को खतरनाक व्यवसायों में काम करने से रोकता है, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009:यह सभी बच्चों को 6 से 14 वर्ष की आयु तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान करता है, जो बाल श्रम को कम करने में मदद करता है।राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना (एनसीएलपी) :यह परियोजना बाल श्रम से मुक्त कराए गए बच्चों को गैर-औपचारिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, मध्याह्न भोजन, वजीफा और स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है, और उन्हें औपचारिक स्कूली शिक्षा प्रणाली में शामिल करती है। बाल श्रम (निषेध और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2016:इस संशोधन के तहत, 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को सभी व्यवसायों में काम करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिसमें पारिवारिक उद्यमों में काम करना भी शामिल है,, बालश्रम से संबंधित मामलों पर राष्ट्रीय बाल श्रम उन्मूलन प्राधिकरण (एनसीएलए) का गठनःयह प्राधिकरण बाल श्रम को खत्म करने में मदद करता है, और बाल श्रम से संबंधित मामलों पर कानूनी कार्रवाई करता है।

साथियों बात अगर हम भारत में बाल श्रम को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों की करें तो, भारत में बाल श्रम उन्मूलन के लिए, बाल श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986,शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना (एनसीएलपी) जैसी नीतियां और योजनाएं शुरू की गई हैं। बाल श्रम (निषेध और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2016 ने बाल श्रम के खिलाफ कानूनी ढांचे को मजबूत किया है।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो भारत में भी अनेक बाल श्रमिक हैं। और बाल श्रमिकों की तेजी से संख्या भी बढ़ रही है हालांकि केंद्र और राज्य सरकारों ने इसके खिलाफ कड़े कदम उठाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है परंतु बाल श्रम रोकने में श्रम विभाग, बाल संरक्षण विभाग, पोलिस, मानव तस्करी विरोधी विभाग, बाल अधिकार आयोग, की सक्रियता में कमी का संज्ञान पीएम को लेना ज़रूरी। देखा जाए तो बाल श्रमिक निम्नलिखित रुप से काम करते हैं ?बाल मज़दूर - वे बच्चे जो कारखानों, कार्यशालाओं, प्रतिष्ठानों, खानों और घरेलू श्रम जैसे सेवा क्षेत्र में मज़दूरी या बिना मज़दूरी में काम कर रहे हैं। गली - मोहल्ले के बच्चे - कूड़ा बीनने वाले, अखबार और फेरी लगाने वाले और भीख मांगने वाले।बंधुआ बच्चे - वे बच्चे जिन्हें या तो उनके माता-पिता ने पैसों की ख़ातिर गिरवी रखा है या जो कर्ज़ को चुकाने के चलने मज़बूरन काम कर रहे हैं।वर्किंग चिल्ड्रन - वे बच्चे जो कृषि में और घर-गृहस्थी के काम में पारिवारिक श्रम का हिस्सा हैं।यौन शोषण के लिए इस्तेमाल किए गए बच्चे - हजारों बालिक बच्चे और नाबालिक लड़कियां यौन शोषण की जद में हैं।घरेलू गतिविधियों में लगे बच्चे - घरेलू सहायता के रूप में काम। इसमें लड़कियों का शोषण सबसे ज़्यादा है - बच्चे छोटे भाई-बहनों की देखभाल, खाना पकाने, साफ-सफाई और ऐसी अन्य घरेलू गतिविधियों में लगे हुए हैं। हालांकि इन गतिविधियों को रोकने के लिए भारत में अनेक कानून कायदे बने हैं जैसे कि, खदानअधिनियम1952-18 साल से कम आयु वाले बच्चों को खदानों में काम करने पर प्रतिबन्ध लगाता है परंतु मेरा मानना है कि संबंधित विभाग शायद इस और ध्यान नहीं दे पा रहा है।

साथियों बात अगर हम हर साल बाल श्रम निषेध दिवस मनाने की करें तो, दुनियाभर में हर साल 12 जून को विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसको मनाए जाने का उद्देश्य 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से श्रम ना कराकर उन्हें शिक्षा दिलाने और आगे बढ़ने के लिए जागरूक करना है। भारत में बालश्रम की समस्या दशकों से प्रचलित है। भारत सरकार ने बालश्रम की समस्या को समाप्त करने क़दम उठाए हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 23 खतरनाक उद्योगों में बच्चों के रोजगार पर प्रतिबंध लगाता है। भारत की केंद्र सरकार ने 1986 में बालश्रम निषेध और नियमन अधिनियम पारित कर दिया। इस अधिनियम के अनुसार बालश्रम तकनीकी सलाहकार समिति नियुक्त की गई। इस समिति की सिफारिश के अनुसार, खतरनाक उद्योगों में बच्चों की नियुक्ति निषिद्ध है। 1987 में, राष्ट्रीय बालश्रम नीति बनाई गई थी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व बाल श्रम निषेध दिवस 12 जून 2025-आओ बच्चों को मज़दूरी नहीं शिक्षा दिलाएं जो सामाजिक आर्थिक राजनीतिक शैक्षणिक क्षेत्रों का सशक्त उपकरण व रोजगार का अस्त्र है, बच्चे हर देश के सुनहरे भविष्य की नींव है, आओ उन्हें मज़दूर नहीं शिक्षित बनाएं, भारत में बाल श्रम रोकने में श्रम विभाग, बाल संरक्षण विभाग, पोलिस, मानव तस्करी विरोधी विभाग, बाल अधिकार आयोग, की सक्रियता में कमी का संज्ञान पीएम को लेना ज़रूरी है।

हुंडई वरना का नया वेरिएंट लॉन्च, नए फीचर्स के साथ इतनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई इंडिया ने Hyundai Verna का नया SX+ वेरिएंट लॉन्च किया है। यह वेरिएंट मैनुअल और iVT ट्रांसमिशन में उपलब्ध है। इसमें बॉस प्रीमियम साउंड सिस्टम लेदर सीट अपहोल्स्ट्री फ्रंट वेंटिलेटेड सीट्स और फ्रंट पार्किंग सेंसर जैसे फीचर्स हैं। ग्लोबल NCAP क्रैश टेस्ट में इसे 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। 1.5 MPi MT वेरिएंट की कीमत 1379300 रुपये और 1.5 MPi iVT की कीमत 1504300 रुपये है।

नई दिल्ली। हुंडई इंडिया ने अल्काजार के बाद अब Hyundai Verna का नया वेरिएंट लॉन्च किया है। इस वेरिएंट के लॉन्च होने के बाद Verna का लाइनअप पहले से ज्यादा बेहतर हो गया है। कंपनी ने Verna का SX+ वेरिएंट लॉन्च किया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लैस किया गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Verna के नए वेरिएंट को किन फीचर्स के साथ लैस किया गया है?

Hyundai Verna SX+ वेरिएंट

हुंडई वरना SX+ वेरिएंट को दोनों मैनुअल और iVT ट्रांसमिशन के साथ लॉन्च किया गया है, जिसकी वजह से लोगों को अब इसमें ज्यादा ऑप्शन मिलेंगे। इस वेरिएंट को न केवल स्टाइलिश और स्पेसियसस है, बल्कि इसमें एडवांस टेक्नोलॉजी और प्रीमियम फीचर्स भी दिया गया है, जो ड्राइविंग एक्सपीरिएंस को और भी बेहतर बनाते हैं।

SX+ वेरिएंट के फीचर्स

इसमें बॉस प्रीमियम साउंड सिस्टम (8 स्पीकर), लेदर सीट अपहोल्स्ट्री, फ्रंट वेंटिलेटेड और हीटेड सीट्स, फ्रंट पार्किंग सेंसर, एलईडी हेडलैम्प्स और अन्य कई फीचर्स दिए गए हैं। यह न केवल लुक और परफॉर्मेंस में शानदार है, बल्कि इसे ग्लोबल NCAP क्रैश टेस्ट में 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग भी मिली हुई है, जो इसे सुरक्षा के मामले में भी टॉप क्लास बनाती है।

कितनी है कीमत?

Hyundai Verna SX+ वेरिएंट के 1.5 MPi MT की एक्स-शोरूम कीमत 13,79,300 रुपये और 1.5 MPi iVT की एक्स-शोरूम कीमत 15,04,300 रुपये है।

वायर्ड टू वायरलेस एडॉप्टर

हुंडई ने अपना नया वायर्ड टू वायरलेस एडाप्टर इंफोटेनमेंट सिस्टम भी इसमें दिया गया है, जिससे फीचर्स को इस्तेमाल करना पहले से ज्यादा आसान होगा। चाहे मैप नेविगेट करना हो या म्यूजिक स्ट्रीम करना हो, वायरलेस एडाप्टर यूजर को गाड़ी के इंफोटेनमेंट सिस्टम के जरिए सीधा अपने पसंदीदा मोबाइल एप तक पहुंचा देगा। यह नई तकनीक हुंडई की डिजिटल और कनेक्टेड कार एक्सपीरियंस को और भी बेहतर बनाती है, जो भारतीय ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करती है।

भारत की नई ईवी नीति से इंपोर्टेड इलेक्ट्रिक कार हो जाएगी सस्ती, मेक इन इंडिया को मिलेगा बढ़ावा

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की नई ईवी नीति के अनुसार सरकार ने इंपोर्ट ड्यूटी को 110% से घटाकर 15% कर दिया है। यह बदलाव ग्लोबल मैन्युफैक्चरर्स को आकर्षित करने और भारत में ईवी की बिक्री बढ़ाने के लिए किया गया है। नई पॉलिसी से ईवी की कीमतें घटेंगी पॉल्यूशन कम होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। विदेशी कंपनियों के निवेश से स्थानीय ईवी मैन्युफैक्चरर्स को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

नई दिल्ली। भारत सरकार ने हाल ही में अपनी इलेक्ट्रिक व्हीकल नीति (New India EV Policy) में एक बड़ा बदलाव किया है। सरकार ने इंपोर्ट ड्यूटी को 110% से घटाकर 15% कर दिया गया है। इससे ग्लोबल ईवी मैन्युफैक्चरर्स को काफी फायदा होगा। आइए जानते हैं कि भारत की नई ईवी पॉलिसी क्या है और इससे आम लोगों और भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री पर क्या असर पड़ेगा?

नई ईवी पॉलिसी क्या है?

इस पॉलिसी के तहत ऐसी कंपनियां जो भारत में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट स्थापित करना चाहती हैं उन्हें कम इंपोर्ट ड्यूटी का फायदा मिलेगा। खासकर उन कंपनियों को जितनी सीआईएफ (CIF - Cost, Insurance, Freight) वैल्यू 30 करोड़ या उससे ज्यादा है। ऐसी कंपनियों को 5 साल के लिए सिर्फ 15 फीसद इंपोर्ट ड्यूटी देनी होगी। इसके लिए कंपनियों को कम से कम 500 मिलियन डॉलर (करीब 4,150 करोड़ रुपये) का निवेश भारत में करना होगा।

बदलाव क्यों किया गया?

ईवी पॉलिसी में यह बदलाव मुख्य रूप से दो कारणों से किया गया है। पहला ग्लोबल मैन्युफैक्चरर्स को आकर्षित करना और दूसरा भारत में ईवी की बिक्री बढ़ाने और पेट्रोल-डीजल वाहनों पर निर्भरता कम है।

आम लोगों को क्या फायदा होगा?

नई ईवी पॉलिसी से आम लोगों को कई फायदे होंगे। कम इंपोर्ट ड्यूटी के कारण ईवी की कीमत घट सकती है, जिससे ज्यादा लोगों लिए यह किफायती होगी। ईवी का इस्तेमाल बढ़ने से पॉल्यूशन कम होगा, जो हमारे पर्यावरण के लिए फायदेमंद होगा। अंतरराष्ट्रीय ब्रैंड्स के आने से भारत में नई टेक्नोलॉजी और इनोवेशन आएंगे, जिससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री पर क्या असर होगा?

नई ईवी पॉलिसी से विदेशी कंपनियों के निवेश से भारत में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स बढ़ेंगी। स्थानीय ईवी मैन्युफैक्चरर्स को अंतरराष्ट्रीय ब्रैंड्स से मुकाबला का सामना करना पड़ेगा, जिससे उन्हें अपनी ईवी प्रोडक्ट को और बेहतर बनाना होगा। इससे ईवी चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को भी बढ़ावा मिलेगा।

यामाहा बना रही इलेक्ट्रिक टर्बो मोटरसाइकिल इंजन, लोगों को मिलेगा ज्यादा माइलेज

परिवहन विशेष न्यूज

यामाहा एक इलेक्ट्रिक टर्बो मोटरसाइकिल इंजन पर काम कर रहा है जिसके लिए उसने पेटेंट भी फाइल किया है। यह इंजन यामाहा की CP3 थ्री-सिलेंडर इंजन-संचालित मोटरसाइकिलों में से एक पर लगाया जाएगा। इलेक्ट्रिक टर्बो टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से टर्बो लैग की समस्या नहीं होगी और कम RPM पर भी तेजी से बूस्ट मिलेगा। यह एक हाइब्रिड सिस्टम है जो फ्यूल की खपत को कम करेगा।

नई दिल्ली। यामाहा इलेक्ट्रिक टर्बो मोटरसाइकिल इंजन बनाने पर काम कर रहा है। हाल ही में कंपनी ने अपनी CP3 थ्री-सिलेंडर इंजन-संचालित मोटरसाइकिलों में से एक पर इलेक्ट्रिक टर्बो के लिए पेटेंट अप्लाई किया है। अगर यह इंजन यामाहा के मोटरसाइकिलों में आगे चलकर देखने के लिए मिलता है, तो यह YZF-R9 और MT-09 में जितनी पावर जनरेट होती है, उससे कही ज्यादा पावर वाला यह इंजन बन जाएगा। आइए जानते हैं कि यामाहा में इलेक्ट्रिक टर्बो मोटरसाइकिल इंजन मिलने के बाद लोगों को क्या फायदा होगा?

इलेक्ट्रिक टर्बो टेक्नोलॉजी क्या है?

यह एक ऐसा सिस्टम है, जहां एक इलेक्ट्रिक मोटर टर्बोचार्जर को पावर देता है। जो टर्बोचार्जर इंजन आते हैं वह एग्जॉस्ट गैसों से पावर लेते हैं, लेकिन इलेक्ट्रिक टर्बो में इंजन में इलेक्ट्रिक मोटर पावर जनरेट करने का काम करती है। इससे टर्बो लैग की समस्या का सामना राइडर को नहीं करना पड़ता है। यामाहा का यह इंजन कम RPM पर भी तेजी से बूस्ट देता है, जिसकी मोटरसाइकिल की परफॉर्मेंस में काफी ज्यादा सुधार देखने के लिए मिलेगा।

यामाहा का नया इंजन कैसा है?

यामाहा का नया इंजन एक हाइब्रिड सिस्टम है, जो इंटरनल कॉम्बशन इंजन (ICE) और इलेक्ट्रिक मोटर को मिलाकर काम करता है। इससे इलेक्ट्रिक मोटर टर्बोचार्जर को पावर देती है, जिससे इंजन की कैपेसिटी बढ़ती है और फ्यूल की खपत भी कम होती है। वहीं, यह बाइक को तेजी से एक्सलरेट करने में भी मदद करेगी।

लोगों को क्या फायदा होगा?

यामाहा की बाइक में इस इंजन के मिलने के बाद मोटरसाइकिल कम आरपीएम पर ही तेजी से एक्सलरेट करेगी, जिससे राइडिंग का एक्सपीरिएंस पहले से ज्यादा बेहतर होगा। इससे फ्यूल की खपत कम होगी, जो राइडर्स के लिए काफी फायदेमंद होगा। टर्बो लैग की समस्या खत्म होने से राइडिंग स्मूथ और आरामदायक होगी।

नौ साल बाद फिर शुरू हुई ये योजना, बाइक को रेंट पर लगाकर करें कमाई, युवाओं को मिलेगा फायदा

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र सरकार ने 9 साल बाद 'रेंट-ए-बाइक' योजना को दोबारा शुरू करने की मंजूरी दे दी है। इससे पर्यटकों, आम नागरिकों और युवाओं को न सिर्फ यात्रा में सहूलियत मिलेगी, बल्कि रोजगार का एक नया अवसर भी उपलब्ध होगा।

नई दिल्ली। महाराष्ट्र सरकार ने 9 साल पहले बंद की गई बाइक रेंट योजना (Rent-a-Bike) को फिर से शुरू करने की घोषणा की है। इससे राज्य में पर्यटन और स्वरोजगार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। 2016 में इस योजना पर रोक लगा दी गई थी क्योंकि इसे बिना किसी रेगुलेशन के चलाया जा रहा था।

राज्य परिवहन विभाग ने योजना से जुड़े कुछ जरूरी नियमों की जानकारी दी है। अब कोई भी व्यक्ति अगर बाइक किराए पर देना चाहता है, तो उसे 1,000 रुपये सालाना फीस देकर लाइसेंस लेना होगा। इसके लिए कम से कम 5 बाइक्स होना अनिवार्य है। साथ ही, बाइक केवल उसी जिले या शहर की सीमा में किराए पर दी जा सकेगी, जहां लाइसेंस जारी हुआ है।

गड़बड़ियों के कारण बंद हुई थी सर्विस

इस योजना को सबसे पहले 1997 में केंद्र सरकार ने तैयार किया था, जिसे महाराष्ट्र ने बिना सख्त नियमों के लागू कर दिया। 2016 में इसे बंद करने का फैसला लिया गया था क्योंकि पर्यटन स्थलों पर बिना नियमों के बाइक किराए पर देने से कई गड़बड़ियां सामने आई थीं।

हालांकि योजना पर रोक थी, लेकिन अवैध रूप से बाइक किराए पर दी जा रही थीं। इससे राज्य सरकार को राजस्व का नुकसान हो रहा था और यात्रियों की शिकायतों के निवारण की कोई व्यवस्था भी नहीं थी।

परिवहन मंत्री प्रताप सरनाइक ने बताया कि अब इस योजना को कानूनी रूप से लागू करने की मंजूरी दे दी गई है। इससे अवैध ऑपरेटरों पर सख्ती की जाएगी और टूरिस्ट को सस्ती परिवहन सुविधा मिलेगी। इस योजना से कोंकण जैसे पर्यटन स्थलों पर फायदा होगा, जहां ऑटो और टैक्सी चालक पर्यटकों से मनमाना किराया वसूलते हैं।

आरसीबी की जीत पर दिल्ली पुलिस ने किया सोशल मीडिया पर मजेदार पोस्ट, मजाकिया अंदाज में दिया गंभीर मैसेज

परिवहन विशेष न्यूज

RCB ने पहली बार IPL 2025 का खिताब जीता है जिसका जश्न उनके फैंस मना रहे हैं। दिल्ली पुलिस ने भी RCB की जीत पर एक मजेदार पोस्ट किया है जिसमें युवाओं और उनके माता-पिता को गाड़ी चलाने की जल्दी न करने का संदेश दिया गया है। पोस्ट में कहा कि RCB ने 18 साल इंतजार किया वैसे ही गाड़ी चलाने के लिए सही उम्र का इंतजार करना चाहिए।

नई दिल्ली। IPL 2025 का खिताब रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (RCB) ने अपने नाम किया है। यह खिताब RCB ने पहली बार जीता है। इस जीत का जश्न RCB फैंस जोर-शोर से मना रहे हैं। इस सेलेब्रेशन को दिल्ली पुलिस ने भी खास अंदाज में किया है। दिल्ली पुलिस ने सोशल मीडिया पर एक मजेदार पोस्ट किया है। जिसे देखकर आप भी मुस्करा उठेंगे। दिल्ली पुलिस ने हल्के-फुल्के अंदाज में एक गंभीर संदेश दिया है। यह संदेश खासकर उन युवाओं और उनके माता-पिता के लिए है, जो गाड़ी चलाने की जल्दी में रहते हैं।

क्या है दिल्ली पुलिस की पोस्ट?

दिल्ली पुलिस ने RCB की जीत पर सोशल मीडिया पर मजेदार पोस्ट किया है। इस पोस्ट में लिखा है कि देखो! 18 साल वेट किया.. और तुम अभी से कार, बाइक चलाने के लिए जिद करते रहते हो पापा-मम्मी से!

यह पोस्ट हमें याद दिलाती है कि हर चीज का एक सही समय होता है। जैसे IPL ट्रॉफी के लिए RCB ने 18 साल का इंतजार करना पड़ा, ठीक वैसे ही गाड़ी चालने के लिए कानूनी और समझदारी भरा इंतजार जरूरी है।

गाड़ी चलाने की सही उम्र

भारतीय मोटर व्हीकल एक्ट के तहत गाड़ी चलाने के लिए आपकी उम्र कम से कम 18 साल होनी चाहिए। यह नियम इसलिए बनाया गया है, क्योंकि 18 साल की उम्र तक आते-आते, युना न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से इतने तैयार हो जाते हैं कि वह सड़क पर सही फैसला ले सकें।

कम उम्र में ड्राइविंग के खतरे

बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाना खासकर कम उम्र में बेहद खतरनाक हो सकता है। युवाओं में अक्सर जोश ज्यादा होता है और अनुभव कम, जिसकी वजह से हादसे का खतरा बढ़ जाता है। बिना ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाते समय पकड़े जाने पर न केवल भारी जुर्माना लगाया जाता है, बल्कि इससे कानूनी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है जिसका असर उनके भविष्य पर भी पड़ सकता है।

2025 येज़्दी एडवेंचर बिल्कुल नए लुक के साथ लॉन्च, पहले से सस्ती और ज्यादा फीचर्स से हुई लैस

परिवहन विशेष न्यूज

2025 येज़्दी एडवेंचर भारतीय बाजार में लॉन्च हो गई है जिसमें नया फेसिया बेहतर कलर ऑप्शन और अधिक फीचर्स हैं। 2.14 लाख रुपये से शुरू होकर 2.26 लाख रुपये एक्स-शोरूम तक इसकी कीमत है। इसमें 334cc का इंजन है जो 29.60 PS की पावर देता है। बाइक में टेलिस्कोपिक फोर्क और मोनोशॉक सस्पेंशन हैं। सीट की ऊंचाई 815 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 220 मिमी है।

नई दिल्ली। 2025 येज़्दी एडवेंचर को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। इसे साल 2022 के बाद दूसरी बार अपडेट किया गया है। जब यह लॉन्च हुई थी तब इसमें कई खामियां थी, जिसे 2024 में अपडेट के साथ दूर किया गया था। अब कंपनी ने भारत में इसका 2025 वर्जन लॉन्च किया है। येजदी एडवेंचर को बिल्कुल नया फेसिया, कई बेहतरीन कलर ऑप्शन और पहले से ज्यादा फीचर्स दिए गए हैं।

क्या-क्या नया मिला?

नई Yezdi Adventure को बिल्कुल नया पहचान दिया गया है। इसे नया फेसिया दिया गया है। लुक के हिसाब से एडवेंचर को नया हेडलाइट सेटअप दिया गया है। इसमें एक तरफ LED हेडलाइट दी गई है, जबकि दूसरी तरफ एक प्रोजेक्टर दिया गया है। नई हेडलाइट के साथ ही नया और अट्रैक्टिव फ्रंट फेंडर और अपग्रेडेड विंडस्क्रीन दी गई है।

इसकी सीट कुशनिंग और फैब्रिक को भी बदला गया है, ताकि टूरिंग के साथ-साथ सिटी राइडिंग के लिए पहले से भी ज्यादा आरामदायक है। इसके पीछे की तरफ भी स्प्लिट लाइटिंग थीम दिया गया है। इसमें अब डुअल-एलईडी टेल लाइट्स दी गई है। बाइक सिल्हूट पहले की तरह ही है, लेकिन इसे नया डिजाइन दिया गया है। इसे 6 नए कलर भी दिए गए हैं।

Yezdi Adventure की कीमत

इसे पहले से ज्यादा किफायती किया गया है। 2025 येजडी एडवेंचर को 2.14 लाख रुपये से लेकर 2.26 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। 2024 वर्जन की तुलना में बेस वेरिएंट 1,000 रुपये ज्यादा सस्ती है।

अपनी गर्मी की छुट्टी को यादगार बनाएं

विजय गर्ग

गर्मी की छुट्टी को यादगार बनाने के तरीके में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को छुट्टियों से बहुत प्यार है। जैसे ही उनकी घोषणा की जाती है, उनके चेहरे खुशी से झूम उठते हैं। यह स्कूल की दैनिक हलचल से स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक सुनहरा समय है, सुबह जल्दी उठने के लिए नहीं, पसंदीदा खेल खेलने के लिए, यात्रा करने और परिवार के साथ लंबा समय बिताने के लिए। छुट्टियों के दौरान, बच्चों को ऐसा काम दिया जाना चाहिए जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है और उनकी प्रगति और विकास से संबंधित है। छुट्टी के काम का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम का अभ्यास करने तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि बच्चों के मन, मस्तिष्क, शरीर और चरित्र को भी पूरी तरह से विकसित करना चाहिए। दूसरे, अगर हम इस बार को बच्चों के कौशल को निखारने का एक विशेष अवसर कहते हैं, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। बच्चे इस समय का अच्छा उपयोग करके अपने ज्ञान में मूल्यवान परिवर्धन कर सकते हैं।

होमवर्क पूरा करना

पहली बात जो बच्चों को करनी है, वह शिक्षकों द्वारा दिए गए होमवर्क को करना है। जो बच्चे अपने लक्ष्य के पीछे हैं, वे कड़ी मेहनत कर सकते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। स्कूल के माध्यम से बच्चों को विशेष अवकाश गृहकार्य उपलब्ध कराया गया है। यह काम बहुत दिलचस्प और ज्ञान बढ़ाने वाला है। इस काम पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। वैसे भी पढ़ाई में नई ऊंचाइयों को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। बच्चे छुट्टी के अवसर का लाभ उठा सकते हैं और पाठ-सहायता गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।

जीवन कौशल प्रशिक्षण

शिक्षा केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है। बच्चों को घर के काम, खाना बनाना, बजट बनाना, चीजों का ख्याल रखना आदि सीखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि दैनिक कार्यों की सूची कैसे बनाई जाए, खरीदारी की सूची बनाएं और खर्चों का अनुमान लगाएं, सरल व्यंजनों को बनाने की कोशिश करें, आदि। उन्हें बताया जाना चाहिए कि अपने कमरे को कैसे साफ रखें, सब कुछ अपनी जगह पर रखें, आदि। इस तरह के कार्य बच्चों में आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं।

सुंदर लेखन

विद्वानों का कहना है कि अगर लेखन सुंदर है, तो अध्ययन करना आसान हो जाता है। छुट्टियों के दौरान, बच्चों को अपने लेखन को सुंदर बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस काम के लिए हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक अक्षर की संरचना को गहराई से समझा जा सकता है। सुंदर लेखन के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। परीक्षाओं में सुंदर लेखन बहुत महत्वपूर्ण है। इससे छात्रों को अपने पेपर में बहुत अच्छे अंक मिल सकते हैं क्योंकि जब शिक्षक पेपर चेक करता है तो उन्हें पेपर चेक करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। इससे छात्रों को पेपर में बहुत अच्छे अंक मिलते हैं।

ड्राइंग और पेंटिंग का काम

बच्चों के हितों के अनुसार अवकाश का काम किया जाना चाहिए। छुट्टियों के दौरान ड्राइंग और पेंटिंग भी की जा सकती है। एक बच्चा जो ड्राइंग में अच्छा है, वह अपनी पढ़ाई में अधिक प्रगति कर सकता है। जबकि यह एक बहुत ही दिलचस्प विषय है, यह ज्ञान को भी बढ़ाता है। यह काम बच्चों की कल्पना को बढ़ाता है और उनकी आंतरिक क्षमताओं को विकसित करता है। यदि संभव हो, तो बच्चों को पेंटिंग में छुट्टियों के दौरान कोचिंग दी जानी चाहिए ताकि बच्चों के कौशल में सुधार हो सके।

खेलकूद और योग में भाग लेना

छुट्टियों के दौरान बच्चों को अपने शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए खेलों में भाग लेना चाहिए। खुले मैदान में खेले जाने वाले आउटडोर खेलों में भाग लेना चाहिए। इसके अलावा इनडोर खेलों में भी भाग लिया जा सकता है। खेलों से बच्चे में सहयोग, सहजता, बड़ों के प्रति सम्मान और अनुशासन की भावना विकसित होती है। इसके अलावा छुट्टियों के दौरान छोटे बच्चों को कबड्डी, लुका-छिपी, बरहन-डीटी, कोटला-छपकी आदि खेलों में भी भाग लेना चाहिए। इनसे बच्चों में धैर्य, शक्ति और टीम वर्क के गुण बढ़ते हैं। छुट्टियों के दौरान बच्चों को किसी उपयुक्त शिविर में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे बच्चों के चरित्र में सुधार हो सके और इससे छात्रों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

तकनीकी युग से संबंधित कार्य आज के दौर में तकनीक का बहुत महत्व है। शर्त यह है कि इसे बर्बाद न किया जाए। बच्चों को ऑडियो-वीडियो प्रोजेक्ट बनाने के बारे में बताया जाना चाहिए। रील या वीडियो के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री का निर्माण और उसके अध्ययन को गहराई से समझाया जाना चाहिए, ताकि भविष्य में वे तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सफलता प्राप्त कर सकें। आज के समय में बच्चों को कंप्यूटर का ज्ञान होना जरूरी है, इसलिए छुट्टियों में बच्चों को कंप्यूटर की कोचिंग भी देनी चाहिए, ताकि छुट्टियों में बच्चे कंप्यूटर में एक्सपर्ट बन सकें।

पर्यावरण संरक्षण

छुट्टियों के दिनों में बच्चे पर्यावरण की देखभाल के लिए आगे आ सकते हैं। वास्तव में पर्यावरण को खुशनुमा बनाना हम सबका कर्तव्य है। हम गांव के आम स्थानों, स्कूलों और अपने घर के बगीचों की सुरक्षा करके और नए पौधे लगाकर इसमें अपना योगदान दे सकते हैं। जो हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। बच्चों को पौधों की देखभाल के लिए प्रेरित करने की जरूरत है ताकि उन्हें पर्यावरण के बारे में जानकारी मिल सके।

प्रतिदिन टहलना और व्यायाम करना

रोजाना सैर और व्यायाम भी छुट्टियों का हिस्सा होना चाहिए। हल्का-फुल्का व्यायाम और सैर करके हम स्वस्थ रह सकते हैं। रोजाना सैर करने से कई बीमारियाँ दूर होती हैं। इसलिए सुबह की सैर और व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए।

खिलौने बनाना

बच्चे पुरानी और इस्तेमाल की हुई चीज़ों से खिलौने बना सकते हैं। यह गतिविधि रोचक और सार्थक दोनों है। यह बच्चों को अपनी प्रतिभा को विकसित करने का सुनहरा अवसर देता है।

साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन

छुट्टियों के दौरान लाइब्रेरी की किताबें पढ़नी चाहिए। कहानियाँ, आत्मकथाएँ, ऐतिहासिक किताबें या धार्मिक ग्रंथ बच्चों की सोच को व्यापक बनाते हैं। इसके अलावा अच्छी और ज्ञानवर्धक किताबें हमारे घर की लाइब्रेरी का हिस्सा होनी चाहिए। अच्छा साहित्य पढ़ने से न केवल हमारा ज्ञान बढ़ता है बल्कि हमारा शब्द भंडार भी बढ़ता है। हमें उन्हें महान विद्वानों, वैज्ञानिकों और गणितज्ञों की किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित हो सके।

पर्यटन

कान और आँखों के बीच सिर्फ़ चार अंगुल का फासला नहीं होता। यह अंतर बहुत बड़ा है। किसी भी चीज़ के बारे में पढ़ने से ज़्यादा जानकारी आपको उसे देखकर मिलती है। अगर आप ताजमहल के बारे में विस्तार से लिखना चाहते हैं, तो उसे अपनी आँखों से देखना बहुत ज़रूरी है। इसलिए बच्चों के लिए सैद्धांतिक ज्ञान ही काफ़ी नहीं है, उन्हें ऐतिहासिक जगहों पर जाना चाहिए, जिससे उन्हें व्यावहारिक जानकारी मिले।

माता-पिता की मदद करना

बच्चों को छुट्टियों के दौरान घर और बाहर के कामों में अपने माता-पिता की मदद भी करनी चाहिए। इससे बड़ों के प्रति सम्मान बढ़ता है। वहीं दूसरी ओर काम करने की इच्छा और जिम्मेदारी का अहसास भी बढ़ता है।

सामाजिक रूप से जिम्मेदार कार्य

बच्चों को सामाजिक भावना से जुड़ने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। कम क्षमता वाले बच्चों को उपचारात्मक कक्षाएं लगाकर शिक्षित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। यदि संभव हो तो उनके घर जाकर उन्हें शिक्षित करना बहुत ही ईमानदारी का काम होगा। इसके अलावा पानी बचाने के लिए पोस्टर बनाना, पक्षियों के लिए पानी के बर्तन रखना, पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाना आदि छुट्टियों के दौरान किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल किए जाने चाहिए।

छुट्टियों में किए जाने वाले काम बच्चों को न केवल पढ़ाई में बल्कि जीवन के हर पहलू में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करते हैं, जो उन्हें रचनात्मक, सीखने योग्य और जीवन कौशल से परिपूर्ण बनाते हैं। बच्चों को हर दिन कुछ नया सीखने, सोचने और करने के लिए उत्साहित होना चाहिए। इसलिए गर्मी की छुट्टियों का सदुपयोग करते हुए बच्चों को अपनी कला और प्रतिभा को निखारने का अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। आज के समय के संदर्भ में इन नेक कामों की अधिक आवश्यकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार
मलोट पंजाब

वायरस के बदलते रूप से मुकाबला

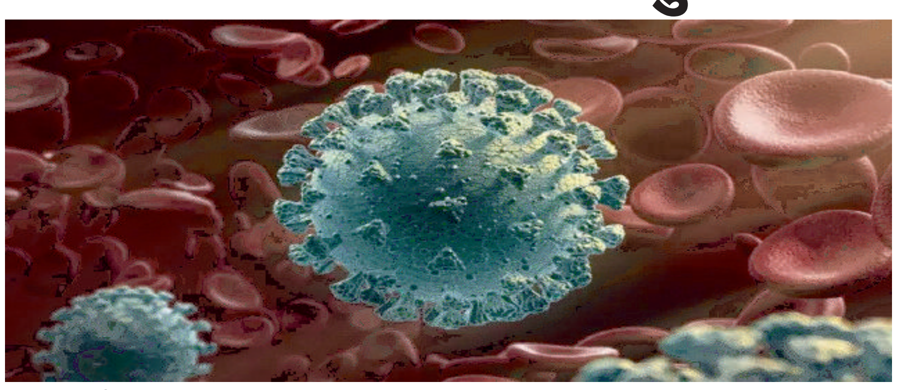

विजय गर्ग

पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के स्कूल आफ पब्लिक हेल्थ और पेन स्टेट के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक हालिया अध्ययन में एम-आरएनए वैक्सीन का एक नया प्रकार विकसित किया गया है, जिसे 'ट्रांस-एमप्लीफाइंग एम-आरएनए प्लेटफार्म' नाम दिया गया है। एमआरएनए वैक्सीन का यह नया स्वरूप लगातार उत्परिवर्तित (म्यूटेट) होने वाले वायरसों- जैसे सार्स- सीओवी - 2 और एवियन इन्फ्लूएंजा ए (एचएन1) के लिए अधिक प्रभावी है। हालांकि वर्तमान एम-आरएनए वैक्सीन, जैसे कि कोविड- 19 को रोकने के लिए प्रयोग किए जाने वाले, प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को प्रेरित करने में अत्यधिक प्रभावी हैं, लेकिन ये दो महत्वपूर्ण चुनौतियां प्रस्तुत करते है- इनके उत्पादन के लिए बड़ी मात्रा में एम-आरएनए की जरूरत होती और वायरस के निरंतर भेष बदलने की प्रकृति । शोधपत्र के वरिष्ठ लेखक सुरेश कुचिपुडी के मुताबिक, "वायरस बदलता रहता है, जिससे लक्ष्य भी बदलता है, और वैक्सीन को अद्यतन करने में समय लग जाता है।" यही वह बिंदु है जहां नई ट्रांस- एंप्लीफाइंग तकनीक वायरस का खेल बिगाड़ सकती है।

नई वैक्सीन तकनीक दो अलग-अलग एम-आरएनए अणुओं का प्रयोग करती है- रेप्लिकेस अनुक्रम और एंटीजन अनुक्रम। जहां रेप्लिकेस अनुक्रम एम-आरएनए अणु वायरस प्राप्त एक एंजाइम को कोड करता है जो कोशिका के अंदर एम-आरएनए की प्रतिलिपि बनाता है, जिससे एंटीजन उत्पादन बढ़ता है। वहीं एंटीजन अनुक्रम एम-आरएनए अणु वायरस के स्पाइक प्रोटीन जैसे संरचनात्मक प्रोटीन को कोड करता है, जो प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि रेप्लिकेस अनुक्रम को पहले से तैयार रखा जा सकता है। जब भी किसी नए वायरस के विरुद्ध वैक्सीन विकसित करनी हो, तो शोधकर्ताओं को केवल नया एंटीजन जोड़ना होगा, जिससे उत्पादन लागत और समय में भारी बचत आएगी।

शोधकर्ताओं ने सार्स- सीओवी - 2 के सभी प्रमुख वैरिएंट्स के स्पाइक प्रोटीन का विश्लेषण कर एक साझा संरचना निकाली, जिसे ₹कंसेंसस स्पाइक प्रोटीन₹ कहा जाता है। यही तकनीक इस नई वैक्सीन का आधार बनी। इस नई वैक्सीन के निर्माण में एम-आरएनए की मात्रा पारंपरिक वैक्सीनों की अपेक्षा 40 गुना कम लगती है। इससे लागत में कमी आती है। बड़े पैमाने पर उत्पादन सरल होता है। इसकी व्यापक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया के कारण बार-बार बूस्टर डोज की जरूरत भी कम हो सकती है। शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि भविष्य में इस कम लागत और व्यापक सुरक्षा वाले एंटीजन डिजाइन के सिद्धांतों पर आधारित वैक्सीन को बर्ड फ्लू जैसी अन्य जटिल चुनौतियों पर लागू किया जा सकेगा।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त
प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी:बीज की सीख

विजय गर्ग

जामुन के दो बीज थे। एक छोटा, दूसरा उससे थोड़ा बड़ा। दोनों काफी दिनों से मिट्टी के भीतर पड़े हुए थे। भीतर का अंधकार देख छोटा बीज सहम जाता। वह अंधकार से बाहर आना चाहता था। जीवन में कुछ करना चाहता था। मगर उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसका जीवन कैसे बदलेगा। एक दिन अधीर होकर उसने बड़े बीज से कहा, 'भाई ! आखिर हम कब तक यहां पड़े रहेंगे। मुझे इस अंधकार से बहुत डर लगता है। मैं जल्द से जल्द बाहर निकलना चाहता हूं।'

बड़ा बीज उसे धीरज बंधाते हुए बोला, 'थोड़ा सब्र करो। समय आने पर हम इस अंधकार से जरूर बाहर निकलेंगे।'

गर्मी के दिन बीत गए तो बरसात शुरू हुई। मिट्टी कुछ नम हुई। बीज ने अपने भीतर हरकत महसूस की। जल्द ही दोनों बीज अंकुरित हो बाहर झांकने लगे। बाहर की दुनिया देख छोटा आश्चर्य से भर उठा। हवा के मंद झोकों को उसने महसूस किया। धूप की किरणें उसे बहुत सुहाई ।

विशाल आकाश को वह देर तक देखता रहा। उसके लिए सब कुछ नया और अद्भुत था। उसके भीतर से आवाज आई, 'वाह ! मिट्टी के बाहर की दुनिया कितनी खूबसूरत है।' उसकी अपार खुशी को बड़ा बीज महसूस कर रहा था। असल में बड़ा बीज भी कब से बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। वह भी बहुत खुश था ।

रात को जब चांद निकला तो छोटे ने उसे कोई खिलौना समझा। उसने अधीरता से बड़े से कहा, ' भाई वह देखो, आकाश के पास कितना सुंदर खिलौना है।' 'हां छोटे ! वह तो बहुत सुंदर लग रहा।' 'काश मैं उसे छू सकता।' छोटे ने आहें भर कर कहा । उसकी प्यारी बातें सुन बड़ा मुस्कुरा पड़ा। कुछ दिनों में जामुन के दोनों पौधे पेड़ का आकार लेने लगे ।

तने में जब कोई नई शाखा फूटती तो छोटा चहक उठता, 'देख भाई मैं बढ़ रहा हूं।'

छोटे की बात सुनकर बड़ा प्यार से अपनी एक शाख उसकी ओर झुका देता। जैसे उसे आशीष दे रहा हो। समय के साथ दोनों लंबे होते रहे। जब हवा चलती तो दोनों के पतले तने एकदम झुक जाते। छोटे को इस तरह ₹हवा के साथ झूम कर बहुत आनंद आता। मगर बड़े को छोटे की फिक्र होती। कहीं हवा से छोटे की डालियां टूट न जाए। मगर छोटे को कोई फर्क नहीं पड़ता। वह हवा के साथ खुद भी पूरी ताकत से डोल उठता, साथ ही जोर से हंसता ।

गर्मी की एक दोपहर थी। छोटे और बड़े चुपचाप खड़े थे ।तभी अचानक तेज आंधी चली। हवा के दबाव से छोटा काफी झुक गया और उसका तना टूट कर अलग हो गया। छोटा पीड़ा से कराह उठा। बड़े ने अपनी शाख उस ओर करके उसे बचाने की बहुत कोशिश की ।

मगर बचा नहीं पाया। असल में, तेज हवाओं के कारण बड़ा भी खुद को संभाल नहीं पा रहा था और छोटा गिर पड़ा। अपनी शाखाओं को धरती पर गिरा देख छोटा फूट- फूटकर रो पड़ा।

बड़े ने उसे समझाया, 'छोटे दुखी मत हो। क्या हुआ अगर तुम्हारी शाखाएं टूट गई हैं। तुम्हारी जड़ अब भी सलामत है और तना बचा हुआ है। जल्द ही फिर से नई शाखाएं फूट पड़ेंगी।'

बड़े की बात सुनकर छोटे को कुछ हौसला मिला। उसने खुद को संभाला और अपने आंसू पोछ लिए। वह नई शाख फूटने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ समय बाद हवा बदली। जामुन के पेड़ों में नई कोपलें फूटने लगीं। यह देखकर छोटा बहुत खुश हुआ। नई शाखाओं को बढ़ते देर न लगी। जल्द ही छोटा जामुन का पेड़ बड़े जामुन तक पहुंच गया।

'बड़े देख-देख मैं तुम्हारे बराबर पहुंचने ही वाला हूं'। छोटा इठलाकर कहता ।

उसकी घनी पत्तियों के बीच कई पक्षियों ने अपने घोंसले बना लिए। जामुन के पेड़ दिनभर पक्षियों की मीठी बोली सुनते। उन्हें अपने अंडों को गर्म करते देखते । राह चलते लोगों को अपनी छाया तले सुस्ताते देखते ।

जब जामुन के पेड़ जवान हुए तो फलों से लद गए। टहनियां झुक गईं। शाखाओं से फलों का भार सहन करना मुश्किल होने लगा। छोटे ने बड़े से कहा, 'भाई मैं इतने फलों के भार से टूटने को हूं। क्या किसी तरह हमारे फल कुछ कम नहीं हो सकते।'

बड़े ने उसे एक बार और धीरज बंधाते हुए कहा, 'जैसे ही जामुन के फल पूरी तरह पक जाएंगे उन्हें तोड़ने के लिए कोई न कोई जरूर आएगा।'

बड़े की बात सच निकली। कुछ ही रोज में बच्चे उछल-कूद करते वहां पहुंच गए। कुछ ने पेड़ों पर चढ़कर जामुन तोड़े तो कुछ ने पत्थर मारकर पत्थरों से वह कुछ चोटिल भी हुआ मगर फलों को तोड़ते बच्चे उसे बहुत अच्छे लगे। धीरे-धीरे जामुन का पेड़ हल्का होने लगा । उसे अब सहज महसूस होने लगा था। एक दिन उसने बड़े से कहा, 'बड़े भाई, मैं बहुत खुशनसीब हूं कि मुझे तुम्हारा साथ मिला । तुमने मुझे जीवन की हर परिस्थिति में धैर्य रखना, लड़ना और डटकर खड़े रहना सिखाया। जब भी मैं निराश हुआ, मुझे सहारा दिया। मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूं।'

छोटे की बात सुन बड़ा जामुन का पेड़ एक बार फिर मुस्कराकर बोला, 'तुमने भी मेरी हर बात को ध्यान से सुना और हिम्मत रखी। इसलिए तुम्हारा भी शुक्रिया । ' दोनों ने अपनी शाखाएं एक-दूसरे की ओर बढ़ाकर हाथ मिला लिया।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

रोगाणुरोधी प्रतिरोध का मुकाबला करने के लिए बैक्टीरियोफेज का उपयोग करना

विजय गर्ग

यदि किसी को मूत्र पथ का संक्रमण है, उदाहरण के लिए, पैथोलॉजी लैब की पहचान होगी जीवाणु होने के लिए, कहते हैं, एस्चेरिचिया कोलाई। यह एक दर्जन से अधिक के लिए रोगज़नक़ की संवेदनशीलता को भी निर्धारित करेगा एंटीबायोटिक दवाओं। यह ne है अगर जीवाणु कई या सभी दवाओं के प्रति संवेदनशील है। दुःस्वप्न परिदृश्य है जब यह सभी के लिए प्रतिरोधी है उन्हें। तेजी से, एंटीबायोटिक्स काम नहीं करते क्योंकि बैक्टीरिया ने प्रतिरोध विकसित किया है। इसका अनुमान है विश्व स्तर पर, लगभग मिलियन लोग एक से संबंधित शर्तों से मर रहे हैं हर साल रोगाणुरोधी प्रतिरोध। यह 2050 तक दोगुना हो सकता है। यह एक मूक महामारी है। क्या उपाय है? बड़े पैमाने पर, दवा कंपनियों ने नई एंटीबायोटिक दवाओं के विकास में रुचि खो दी है। जबकि कैंसर के लिए एक दवा का उपयोग लंबे समय तक किया जाता है, एंटीबायोटिक्स कुछ ही दिनों के लिए दिए जाते हैं। इसके अलावा, एएमआर की समस्या के कारण, प्रतिरोध के विकास को रोकने के लिए नए एंटीबायोटिक दवाओं का यथासंभव उपयोग किया जाता है। इसलिए, नई एंटीबायोटिक दवाओं पर काम करने के लिए कंपनियों के लिए कोई वित्तीय प्रोत्साहन नहीं है। कुछ दवा विकास हो रहा है, लेकिन शायद एएमआर समस्या को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है। बैक्टीरियोफेज हैं 'अच्छे वायरस' जो स्वाभाविक रूप से बैक्टीरिया का शिकार करते हैं। वे हमारे चारों ओर हैं, में पानी, मिट्टी में, हमारी आंत में, हमारी त्वचा पर, आदि। माना जाता है कि यह 10 गुना है पृथ्वी पर बैक्टीरिया के रूप में कई चरण। लगभग एक सदी पहले बैक्टीरिया के संक्रमण के खिलाफ फेज का इस्तेमाल होने लगा था, लेकिन एक बार खोजे जाने के बाद एंटीबायोटिक्स ने उन्हें सुपरसीड कर दिया। एक एंटीबायोटिक के विपरीत, चरण केवल एक विशेष जीवाणु के कुछ उपभेदों को मार सकते हैं। वहाँ- सामने, सोवियत ब्लॉक में केवल देश, एंटीबायोटिक दवाओं से कट ओ, जारी रखा उनका उपयोग करने के लिए। 100 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ जॉर्जिया के त्बिलिसी में एक संस्थान, अपनी फेज विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध है। एएमआर के कारण, बाकी दुनिया अब चरणों की खोज कर रही है, और कई देशों में प्रासंगिक शोध जारी है। चरणों का उपयोग जलने, पैर के अल्सर, आंत में संक्रमण, श्वसन संक्रमण, मूत्र पथ के संक्रमण आदि के लिए किया गया है। दो मुख्य रणनीतियाँ हैं इस्तेमाल किया गया। एक, बैक्टीरिया को संक्रमित ऊतक से अलग करें, जांचें कि लैब में इसके खिलाफ कौन सा फेज काम करता है, उस फेज को अधिक बढ़ाएं, और इसे रोगी को प्रशासित करें। ये चरण किसी के स्वयं के फेज बैंक से, या बहुत गंभीर मामलों में भी आ सकते हैं मदद के लिए दुनिया में कहीं और फेज बैंकों से पूछें। ये प्राकृतिक

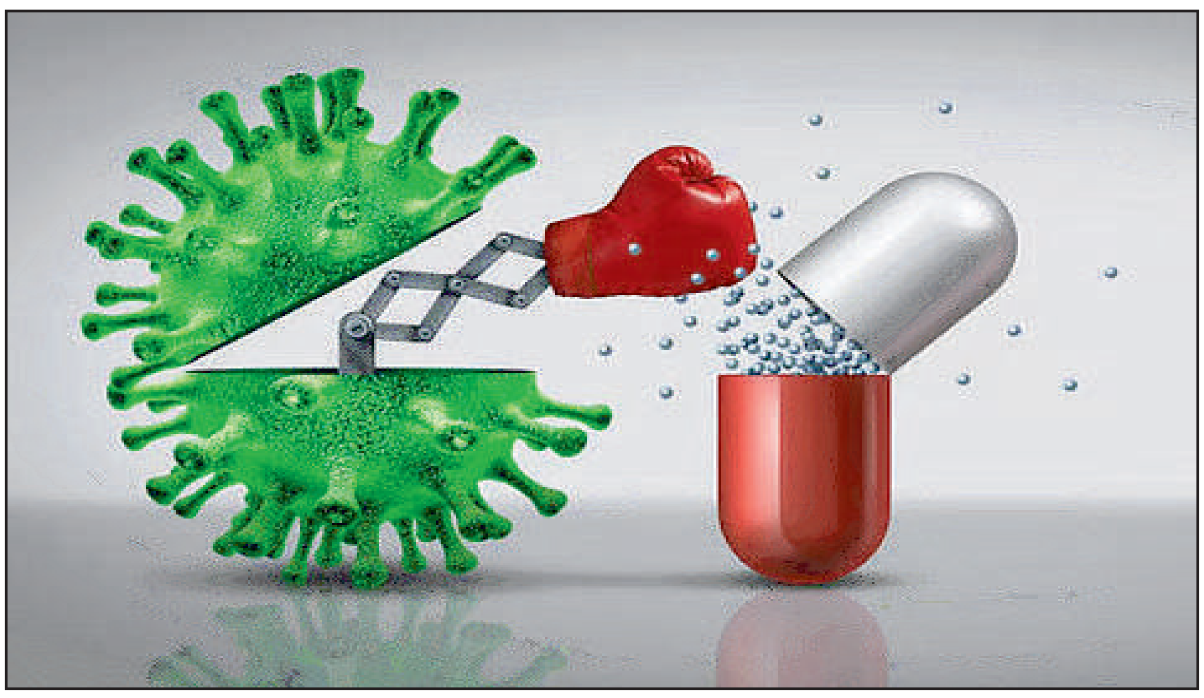

चरण हैं। फिर आनुवांशिक रूप से इंजीनियर फेज होते हैं, जिन्हें लैब में मोदी एड किया गया है, कहते हैं, विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया का विस्तार करते हैं जिन्हें वे मार सकते हैं। दुनिया एएमआर के लिए नए उपचार के तौर-तरीकों के लिए बेताब है। इस प्रकार, पश्चिमी दुनिया में किसी भी सरकार ने एक दवा के रूप में एक फेज को मंजूरी नहीं दी है। लेकिन वे रोगियों को 'अनुकंपा उपयोग' के रूप में चरणों का उपयोग करने की अनुमति दे सकते हैं, ₹आपातकालीन उपयोग का विस्तार हुआ पहुंच, या ₹विशेष पहुंच मार्ग। ये अक्सर एकल, नामित रोगियों के लिए अनुमोदन होते हैं जो हताश आवश्यकता में होते हैं। उदाहरण के लिए, बेल्जियम में इस्तेमाल किया जाने वाला एक और मार्ग, ₹मजिस्ट्रेट है मार्ग" जहां विशेष फार्मेसियों 'यौगिक' एक फेज स्पेसी कैली कर सकते हैं एक विशेष रोगी के लिए। नियामक सिरदर्द हल हो सकता है यदि निम्नलिखित परिदृश्य, जो जीन पॉल Pirnay और बेल्जियम में सहयोगियों शोध कर रहे हैं, बाहर काम करता है । एक उपकरण बनाएं जिसमें निम्नलिखित सभी चरण आयोजित किए जा सकते हैं: बैक्टीरिया को संक्रमण से अलग करें, अनुक्रम अपने जीनोम, एआई का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए करें कि कौन सा फेज जीनोम काम करने की सबसे अधिक संभावना है, डिवाइस में खरोंच से फेज बनाएं, और इसे मौके पर रोगी को प्रशासित करें। ऐसे परिदृश्य में, फेज को दवा के रूप में विनियमित नहीं किया जाएगा। इसके बजाय डिवाइस को विनियमित किया जाएगा। और डिवाइस ही होगा नियमित रूप से उपयोग किए जाने वाले अणु होते हैं, जैसे न्यूक्लियोटाइड और एंजाइम जो फेज को इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। एएमआर का पैमाना ऐसा है कि हमें इससे निपटने के लिए कई बड़ी पहलों की जरूरत है। यदि माइक्रोबायोलॉजिस्ट का एक समूह एआई का उपयोग करने वाली एक भव्य चुनौती की तलाश कर रहा है, तो निश्चित रूप से पिरने मार्ग एक खोज के लायक है?

अनुवादक :

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर
मलोट पंजाब

"अब यही मेरी दुनिया है" : एक स्त्री की चुपचाप क्रांति

कुछ औरतें मायके के बिना जीना सीख जाती हैं – न माँ की गोद, न भाई का कंधा, फिर भी हर रिश्ता निभाती हैं। दुख पी जाती हैं, आँसू अपने आँचल से पोंछ लेती हैं। कोई नहीं कहता ₹बेटी थक गई होगी₹, पर वह खुद को समझा लेती है कि यही अब उसकी दुनिया है। यह कोई हार नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता की चुपचाप क्रांति है।

प्रियंका सौरभ

स्त्री—वह शब्द जिसे कहते तो हम 'जननी', 'धैर्य की मूर्ति', 'संसार की आधारशिला' हैं, लेकिन जब वही स्त्री अपने अधिकार, सम्मान और भावनात्मक सहारे की बात करती है तो समाज उसे 'सहनशील' बने रहने की सलाह दे डालता है। एक बेटी जब विदा होती है, तो उसके साथ भावनाओं की एक पूरी दुनिया भी उसकी ससुराल चली जाती है। पर क्या यह विदाई केवल भौतिक होती है? या एक गहरी मानसिक क्रांति की शुरुआत?

मायका: एक भावनात्मक स्मृति, न कि वापसी का ठिकाना

हर स्त्री का मायका उसके जीवन की पहली पाठशाला होता है। वहीं उसने चलना, बोलना, हँसना, डरना और दुनिया को देखना सीखा। पर एक बार विवाह के बाद, वही मायका धीरे-धीरे 'अतीत' बन जाता है। अब वह 'बेटी' नहीं, 'बहू' होती है। उसे मायके जाना 'ज्यादा नहीं शोभा देता'। वहाँ के दुःख में वह 'मेहमान' बन जाती है और अपने ही घर में 'अजनबी'।

वह जानती है कि अब वह कभी उस गोद में सिर नहीं रख सकती जिसे कभी माँ की ममता कहा जाता था। अब उसके आँसू पोछने के लिए भाई की बाँह नहीं है। अब वह किसी को नहीं कह सकती कि ₹मैं थक गई हूँ₹, क्योंकि अब उसे ही सबको संभालना है।

रिश्तों में ज़िम्मेदारी, पर दिलचस्पी की कमी

वह हर रिश्ते को पूरी निष्ठा से निभाती है। चाहे सास का मान हो या पति की सेवा, बच्चों की परवरिश हो या घर की हर छोटी-बड़ी ज़िम्मेदारी—वह सब कुछ करती है। लेकिन इस प्रक्रिया में उसके अपने सपने, इच्छाएँ और भावनाएँ धीरे-धीरे बेमानी हो जाती हैं। रिश्तों में दिलचस्पी की जगह अब ज़रूरतें रह जाती हैं। अब वह बहू है, माँ है, पत्नी है, लेकिन शायद 'बेटी' अब सिर्फ एक स्मृति बन चुकी है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह मुस्कुराती रहे, चाहे भीतर कितनी ही आँधियाँ क्यों न चल रही हों।

चुप्पी: एक हथियार या हार?

जब कोई कहता है, ₹बेटी थक गई होगी,₹ तो एक मौन गूंजता है—न कोई आवाज़, न कोई शिकायत। क्योंकि उसे मालूम है कि उसकी थकान का कोई मोल नहीं। वह आँसू भी अपने आँचल से ही पोंछ लेती है और खुद को समझा लेती है, "अब यही मेरी दुनिया है।"

यह चुप्पी हार नहीं है, यह एक हथियार है—संघर्ष का, संयम का, और शायद क्रांति का भी। यह वही चुप्पी है जो स्त्रियों को सहने की नहीं, समझने की शक्ति देती है। यह चुप्पी उन्हें टूटने नहीं देती, बल्कि उनके भीतर एक औरत से 'नायिका' बनने की प्रक्रिया को जन्म देती है।

जब 'घर' ही पराया हो जाए

स्त्रियाँ उस घर को 'अपना' मान लेती हैं, जहाँ उन्हें केवल भूमिका निभानी होती है। अपने मन की बात कहने की जगह नहीं होती, बस जिम्मेदारियों का पहाड़ होता है। ऐसे में अगर किसी दिन वह सिर्फ इतना कह दे कि ₹मुझे भी थोड़ी देर बैठना है₹, तो घर में खलबली मच जाती है।

उसे हमेशा दूसरों के सुख में खुश होना सिखाया गया है। खुद के दुःखों को जीने की इजाज़त नहीं। वह घर की लक्ष्मी तो बनती है, पर मन की रानी शायद ही कभी।

आत्मनिर्भरता की अनसुनी कहानियाँ

हम कहते हैं कि औरतें आज आत्मनिर्भर हो गई हैं। वे ऑफिस जाती हैं, पैसा कमाती हैं, निर्णय लेती हैं। पर क्या मानसिक रूप से उन्हें वह स्पेस, वह सुरक्षा, वह 'अपनेपन' का वातावरण मिला है?

वह बिना मायके के भी जीना सीख गई है। यह वाक्य सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि एक पूरी यात्रा का सार है। वह जानती है कि अब किसी का कंधा नहीं मिलेगा। वह अपने आँचल को ही तकिया बना लेती है और अपनी पीठ खुद थपथपा लेती है।

क्या सिर्फ बहू बनकर जीना ज़रूरी है?

स्त्री को एक बहू, पत्नी या माँ बनकर जीने के लिए कहा जाता है, लेकिन कोई नहीं पूछता कि वह एक 'व्यक्ति' के रूप में क्या चाहती है? उसकी भावनाएँ, इच्छाएँ, सपने — क्या वो सबकुछ शादी के साथ खत्म हो जाने चाहिए?

विवाह उसके जीवन का हिस्सा हो सकता है, लेकिन सम्पूर्ण नहीं। वह एक पूरी किताब है, जिसे अक्सर केवल एक पृष्ठ पढ़कर ही समाज तय कर देता है कि वह कैसी स्त्री है।

समाज को स्त्रियों की चुप्पी सुननी होगी

यह लेख किसी एक स्त्री की नहीं, बल्कि अनगिनत स्त्रियों की कहानी है जो अपने आँचल से आँसू पोछकर मुस्कराती हैं। समाज को यह चुप्पी सुननी होगी। यह कोई मौन नहीं, बल्कि एक ज्वालामुखी है जो कभी भी फूट सकता है।

जब स्त्रियाँ कहती हैं, ₹अब यही मेरी दुनिया है,₹ तो यह कोई संतोष नहीं, बल्कि एक ऐसा आत्मनिर्भर संघर्ष है, जिसमें उसने खुद को एक नई दुनिया मान लिया है — बिना शिकायत, बिना समर्थन, बिना अपेक्षा।

समाप्ति नहीं, शुरुआत है ये...

स्त्रियाँ जब चुपचाप घर संभालती हैं, दुख छुपा लेती हैं, हँसी ओढ़ लेती हैं, तो समाज समझता है कि उन्होंने हार मान ली। लेकिन सच्चाई यह है कि यह चुप्पी किसी अंत की नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत की भूमिका होती है।

जब एक स्त्री मायके के बिना भी जीना सीख जाती है, तो समझिए उसने अपने भीतर एक नई दुनिया बसा ली है। वह अब न बेटी रही, न बहू — वह अब केवल एक औरत नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर अस्तित्व है।

साइबर अपराधियों के बढ़ते हौसलें, आमजन में शिकायत की जानकारी का अभाव

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

ऐसा नहीं है कि साइबर अपराध केवल और केवल भारत में हो रहे हैं अपितु यह विश्वव्यापी समस्या होती जा रही है। दुनिया के देशों में देखा जाए तो साइबर ठगी के मामलों में रशिया पहले पायदान तो यूक्रेन दूसरे स्थान पर है।

देश दुनिया में साइबर अपराध के बढ़ते आंकड़े जहां चिंतित करने वाले हैं वहीं यह और भी आश्चर्यजनक और चिंताजनक हालात है कि लाख अवेयरनेस प्रोग्राम व मीडिया में आये दिन साइबर ठगी के समाचारों की भरमार के बावजूद देश में केवल 18 फीसदी लोग ही ऐसे हैं जिन्हें साइबर अपराध होने पर उसकी शिकायत कहां और कैसे करनी है कि जानकारी है। यह तो सरकारी आंकड़ा है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जनवरी-मार्च, 2025 में कराये गये ताजातरीन सर्वे से यह आंकड़ें प्राप्त हुए हैं। दूसरी और यूपीआई से भुगतान में खासा बढ़ोतरी हुई हैं। आज ठेले पर सब्जी बेचने वाले से लेकर दो-पांच रुपए का सामान विक्रेता भी आसानी से यूपीआई से भुगतान प्राप्त कर रहा है। 2022-23 में जहां केवल 38 फीसदी लोग ऑनलाइन पेमेंट करते थे वह आज बढ़कर 50 प्रतिशत के लगभग हो गया है। वास्तविकता तो यह है कि आज ऑनलाइन पेमेंट करना लोगों की आदत में आ गया है। जेब में रुपया-पैसा रखना या कहीं जाते समय साथ पैसा लेजाना लोगों की आदत में अब लगभग नहीं ही रहा है। पर तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि साइबर अपराधियों के हौसले बुलंद है और पिछले तीन सालों में ही साइबर अपराध के आंकड़ें तीन गुणा बढ़ गए हैं। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि आज मोबाइल पर किसी का नंबर डायल करते ही पहले साइबर अपराध से सचेत रहने की कॉलर ट्यून सुनने को मिलती है और उसके बाद बात होती है।

मोबाइल पर नंबर मिलाते ही नहीं अपितु सोशियल मीडिया के प्लेटफार्म खासतौर से इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि पर आजकल साइबर ठगी, डिजिटल अरेस्ट, ऑनलाइन या ब्लेक मेलिंग से सतर्क रहने का संदेश सुनने को मिलता है। इतने के बावजूद ठगी के आंकड़ें चेताने वाले हैं। मजे की बात यह है कि साइबर ठगी के इन रुपों से सबसे अधिक शिकार पढ़े लिखे और समझदार लोग ही हो रहे हैं। लाख समझाइस के बावजूद एक और ठगों के हौसले बुलंद है तो ठगी के शिकार होने वाले लोगों की संख्या और राशि में मल्टीपल बढ़ोतरी हो रही है। खास बात यह है कि ठगी के केन्द्र व ठगी के तरीके से वाकिफ होने के बावजूद यह होता जा रहा है। हांलाकि झारखण्ड के जमातड़ा से ठगों के तंत्र को तोड़ दिया गया पर देश में एक दो नहीं अपितु 74 जिलों में इस तरह की ठगी करने वालों के हॉटस्पॉट विकसित हो गए। झारखण्ड, राजस्थान, हरियाणा और बिहार के केन्द्र पहले पांच प्रमुख सेंटर विकसित हो गए।

ऐसा नहीं है कि साइबर अपराध केवल और केवल भारत में हो रहे हैं अपितु यह विश्वव्यापी समस्या होती जा रही है। दुनिया के देशों में देखा जाए तो साइबर ठगी के मामलों में रशिया पहले पायदान तो यूक्रेन दूसरे स्थान पर है। इनके बाद चीन, अमेरिका, नाइजेरिया और रोमानिया का नंबर आता है। इससे एक बात तो साफ हो जाती है साइबर ठगों सारी दुनिया में सहज पहुंच है। लोगों की गाढ़ी कमाई को हजम करने में इन्हें विशेषज्ञता हासिल है। लोगों की कमजोरी को यह समझते हैं और उसी कमजोरी के चलते पढ़े लिखे और हौशियार लोगों को भी आसानी से ठगी का शिकार बना लेते हैं। जाल ऐसा की यह समझते हुए कि ऐसा आसानी से होता नहीं है फिर भी चक्कर में फंस ही जाते हैं और ठगों के आगे सरेण्डर होकर लुट जाते हैं।

हमारे देश में साइबर ठग या तो किसी तरह का लालच देकर लिंक भेजकर ठगी करते हैं या फिर ड़रा धमकाकर आसानी से ठगी का शिकार बना लेते हैं। सरकार प्रचार के सभी माध्यमों से बार बार व लगातार आगाह कर रही है कि ठगों द्वारा ड़राने वाले तरीके वास्तविक नहीं है। बैंक कभी भी बैंक डिटेल या ओटीपी ऑनलाइन नहीं मांगते पर पता नहीं कैसे ठगों के जाल में फंसकर अपनी मेहनत की कमाई लुटा बैठते हैं। ओटीपी दे देते हैं तो लिंक खोलने के लिए लाख मना करने के बावजूद लिंक खोलकर लुट जाते हैं। पुलिस अधिकारी बन कर जिस तरह से डिजिटल अरेस्ट कर ठगी का रास्ता अपनाया जा रहा है उस संबंध में अवेयरनेस अभियान के बावजूद ठगी का शिकार होने वालों की संख्या या राषि में कमी नहीं हो रही है। डिजिटल अरेस्ट में डॉक्टर, रिटायर्ड जज, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी सहित संभ्रात वर्ग के लोगों को आसानी से जाल में फंसाकर ठगी हो रही हैं वह भी करोड़ों तक की ठगी के उदाहरण मिल रहे हैं। झूठे मामलों में परिजनों को फंसने से बचाने का झांसा देकर ठगी हो रही है। मजे की बात यह है कि इस स्तर तक ड़र या भयाक्रांत हो जाते हैं कि किसी अन्य या पुलिस से समस्या साझा करने की हिम्मत भी नहीं कर पाते और ठगी के बाद हाथ मलते रह जाते हैं। डिजिटल अरेस्ट के मामलें तो दिनोंदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। दरअसल इसमें पुलिस, सरकारी जांच एजेंसी या प्रवर्तन निदेशालय के नकली अधिकारी बन कर इस कदर ड़रा देते हैं कि कई दिनों तक लगातार ऑडियो या वीडियो कॉल करके ठगी का शिकार बना लेते हैं।

ऐसा नहीं है कि सरकारें हाथ पर हाथ धरे बैठी हो। सरकार व वित्तदायी संस्थाओं द्वारा मीडिया के माध्यम से सजग किया जा रहा है। इसके साथ ही झारखण्ड के बड़े केन्द्र जमातड़ा को लगभग समाप्त कर ही दिया है। पर देष में 74 हॉट स्पॉट विकसित हो गए हैं। इनमें हरियाणा का नूंह, राजस्थान का डीग, झारखण्ड का देवघर, राजस्थान का अलवर और बिहार का नालंदा पहले पांच हॉट स्पॉट हो गए हैं। मीडिया द्वारा भी समय समय पर स्ट्रिंग कर इस तरह के केन्द्रों को एक्सपोज किया है पर ठगी कम होने को ही नहीं है। दरअसल आमनागरिकों को भी सजग होना ही होगा। अनजान नंबरों पर बात ही ना करें। ज्योंही कोई डराये धमकायें तो बहकावें में आने के स्थान पर पड़ताल करें। इस तरह के हालात सामने आये तो परेशान होने के स्थान पर परेशानी को साझा करें, पुलिस का सहयोग लेने में भी संकोच ना करें। देखा जाए तो सजगता इस समस्या का समाधान हो सकती है। सबसे ज्यादा जरुरी यह हो जाता है कि लाख सजगता के बावजूद भी यदि साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो उस स्थिति में बिना किसी घबराहट और संकोच के कहां ओर कैसे शिकायत की जा सकती है इसकी जानकारी देने के लिए सरकारी संस्थाओं के साथ ही गैरसरकारी संगठनों को भी आगे आना होगा नहीं तो साइबर अपराध का जिस तरह से दायरा दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है उस पर अंकुश नहीं लग सकेगा।

गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ रही है भाजपा, पार्टी के शीर्ष नेताओं की साफगोई कमाल की रही

नीरज कुमार दुबे

डिजिटल मीडिया वर्ग के साथ संवाद कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय और पार्टी के सारे राष्ट्रीय प्रवक्ता उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को 11 वर्ष पूरे हो चुके हैं और इस समय भाजपा की ओर से मोदी सरकार की उपलब्धियों का जोरशोर से प्रचार देशभर में किया जा रहा है। इस क्रम में प्रेस कांफ्रेंसों के अलावा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भाजपा के नेता पहुँच कर मोदी सरकार की जन-कल्याणकारी नीतियों की चर्चा कर रहे हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम भाजपा की ओर से दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किया गया जिसमें डिजिटल मीडिया के प्रतिनिधियों को देशभर से बुलाया गया और पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने उनके साथ खुलकर संवाद किया। यह वाकई ऐसा कार्यक्रम था जिसमें पार्टी के शीर्ष नेता बेझिझक सारे सवालों के जवाब दे रहे थे। देखा जाये तो आज के इस युग में डिजिटल और सोशल मीडिय ही सबसे बड़ी ताकत बन चुका है इसलिए इस मंच के महारथियों के साथ भाजपा के शीर्ष नेताओं का सीधा जुड़ाव एक अभिनव पहल भी थी।

कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय और पार्टी के सारे राष्ट्रीय प्रवक्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान एक पावरप्वॉइंट प्रेजेंटेशन के जरिये अश्विनी वैष्णव ने उन बड़ी पहलों का जिक्र किया जिससे देश में व्यापक रूप से बदलाव आया और विकसित भारत का आधार तैयार हुआ। अश्विनी वैष्णव ने विपक्ष की ओर से अक्सर उठने वाले सवालों के जवाब भी अपनी प्रेजेंटेशन के जरिये दिये जिससे कई चीजें स्पष्ट हुईं और भ्रम का वातावरण छँटा।

भाजपा के शीर्ष नेताओं ने डिजिटल मीडिया प्रतिनिधियों से सीधे संवाद में स्वीकार किया कि पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान पार्टी अति-आत्मविश्वास का शिकार हो गयी थी। भाजपा के शीर्ष नेताओं ने यह बात मानी कि हमने इस बात पर ठीक से ध्यान नहीं दिया कि 'अबकी बार 400 पार' के नारे का विपरीत असर हो रहा है। भाजपा के शीर्ष नेताओं ने यह भी माना कि आरक्षण के विरोध में जो बात निचले स्तर तक कांग्रेस और उसके एनजीओस ने पहुँचा दी थी उसे भांपने में हमसे देरी हुई और जब तक हमने कदम उठाये तब तक काफी देर हो चुकी थी। पार्टी नेताओं ने यह भी माना कि कई जगह उम्मीदवारों के चयन में खामियां थीं। पार्टी नेताओं ने कहा कि दरअसल लगातार जीत मिलने पर इस तरह का अति-आत्मविश्वास ऊपर से लेकर नीचे तक आ जाता है जिसका दुष्परिणाम देखने को मिला। पार्टी के नेताओं ने माना कि अक्सर भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं की गलतबयानी से पार्टी के लिए शर्मिंदगी हो जाती है, खासकर चुनावों के समय दिये गये विवादित बयानों से ज्यादा असहज स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पार्टी नेताओं ने कहा कि अब वह उम्मीदवार चयन के लिए पैमानों को और कड़ा बना रहे हैं।

पार्टी नेताओं ने यह भी कहा कि मोदी सरकार की उपलब्धियां बेशुमार हैं और विपक्ष अब तक हमारी एक भी उपलब्धि को नकार नहीं पाया है। पार्टी नेताओं ने कहा कि विपक्ष सिर्फ विदेशी मामले जाकर देशी राजनीति में हंगामा करना चाहता है लेकिन जनता इसको स्वीकार नहीं करती। पार्टी नेताओं ने कहा कि भाजपा और आरएसएस के बीच किसी तरह का मतभेद नहीं है और लोकसभा चुनावों के दौरान दिये गये एक विवादित बयान का मुद्दा सुलझ चुका है। भाजपा के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव को लेकर पूछे गये सवाल पर भी शीर्ष नेताओं ने कहा कि संघ और पार्टी के बीच कोई मतभेद नहीं है। केंद्रीय मंत्रिमंडल में फेरबदल की संभावनाओं से इंकार करते हुए पार्टी नेताओं ने कहा कि हाल-फिलहाल इसकी संभावना नहीं है। राहुल गांधी की ओर से संवैधानिक संस्थानों पर लगाये जाने वाले आरोपों पर पार्टी नेताओं ने कहा कि जनता उनके आरोपों पर नहीं बल्कि हमारे संस्थानों पर विश्वास करती है। पार्टी नेताओं ने कहा कि जनता के बीच होने वाले तमाम सर्वेक्षण इस बात को दर्शाते हैं कि राहुल गांधी के मुकाबले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता आज भी शीर्ष पर बनी हुई है।

बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर पार्टी के शीर्ष नेताओं ने यह स्पष्ट किया कि नीतीश कुमार ही एनडीए का मुख्यमंत्री चेहरा होंगे। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार का वोट उनके साथ दृढ़ता से खड़ा हुआ है। पार्टी नेताओं ने कहा कि लेकिन बिहार में टक्कर बराबर की लग रही है। हमें यह देखना है कि हम आगे कैसे निकलेंगे। भाजपा के शीर्ष नेताओं ने सवालों के जवाब में इस बात का विश्वास जताया कि बिहार में एक बार फिर एनडीए की सरकार बनेगी क्योंकि मोदी-नीतीश की जोड़ी का कोई तोड़ नहीं है। पार्टी के शीर्ष नेताओं ने यह भी स्वीकारा कि बंगाल में उनके पास प्रभावी नेतृत्व नहीं है और पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनावों के दौरान भाजपा से वहां कई गलतियां हुईं। पार्टी नेताओं ने कहा कि हम हमारी भूलों से सबक लेकर आगामी विधानसभा चुनाव जीतने की तैयारी में लगे हुए हैं। इसके अलावा भी तमाम राजनीतिक सवालों के जवाब भाजपा के शीर्ष नेताओं ने जिस अंदाज में दिये उसे देखकर वाकई यह लग रहा था कि भाजपा आलाकमान ने गलतियों से सबक ले लिया है।

फंगस केवल फसलों का ही दुश्मन नहीं, वह इंसानों की जान के लिए भी ख़तरनाक है

विजय गर्ग

एक साइंस जर्नल के मुताबिक, फंगस कृषि आतंकवाद का ख़तरनाक हथियार हो सकता है। फ्यूजेरियम ग्रेमिनीअरम नामक एक फंगस विभिन्न अनाजों के विकास को प्रभावित करता है। इससे उपज भी कम हो जाती है। संक्रमित करने के बाद यह फंगस फसल के परिपक्व होने के साथ फैलता जाता है। फ्यूजेरियम ग्रेमिनीअरम छोटे अनाज के पौधों के तने और जड़ों के ऊतकों, अवशेषों में जीवित रहने और नये पौधों को संक्रमित करने के लिए जाना जाता है। यह माइकोटाक्सिन पैदा करता है जिसका सेवन हानिकर होता है।

बीते दिनों अमेरिकी खुफिया एजेंसी एफबीआई ने मिशिगन यूनिवर्सिटी में शोधरत चीनी शोध वैज्ञानिक युनकिंग जियांग को गिरफ्तार किया जो अमेरिका में ख़तरनाक जैविक फंगस फ्यूजेरियम ग्रेमिनिअरम लेकर आई। वैसे फंगस विभिन्न तरह के रोग जैसे हेड ब्लाइट, रूट रौट व सीडलिंग ब्लाइट पैदा करता है। इसकी अधिकांश प्रजातियां मृदाकवक हैं। जबकि फ्यूजेरियम ग्रेमिनीअरम फंगस गेहूं, धान, मक्का और जौ में हेड ब्लाइट रोग फैलाता है। इससे मुख्यतः वोमिटोक्सिन पदार्थ पैदा होता है जो अनाज दूषित करता है। इससे निकले विषाक्त द्रव्य से हर साल अरबों डॉलर की फसल बर्बाद होती है व उपज कम होती है।

गौरतलब है कि एफबीआई ने पिछले साल जुलाई में चीनी शोध वैज्ञानिक जियान के ब्वायफ्रैंड लियू को उसके बैग में मिले लाल पौधे के पदार्थ के बारे में गोलमोल जवाब देने के बाद डेट्रायट हवाई अड्डे से वापस चीन भेज दिया था। लियू के मुताबिक, उसकी योजना मिशिगन यूनिवर्सिटी की लैब में अनुसंधान के लिए इस सामग्री का उपयोग करने की थी। इसके बाद उसने अपनी गर्लफ्रेंड जियान के जरिये छिपाकर इस ख़तरनाक फंगस को मिशिगन यूनिवर्सिटी की लैब तक पहुंचाया। लियू पहले इस लैब में काम करता था। फिलहाल वह चीनी यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं। एफबीआई निदेशक ने इसे गंभीर मामला बताते हुए कहा है कि चीन अमेरिकी संस्थानों में घुसपैठ की साज़शि कर रहा है ताकि खाद्य सुरक्षा तंत्र के जरिये बड़ी आबादी को नुक़सान पहुंचाया जा सके। इस स्ट्रेन के अनधिकृत आयात से अधिक आक्रामक या कीटनाशक प्रतिरोधी वैरिएंट आने का खतरा बढ़ जाता है। इसके कारण नियंत्रण के उपाय कम प्रभावी होते हैं।

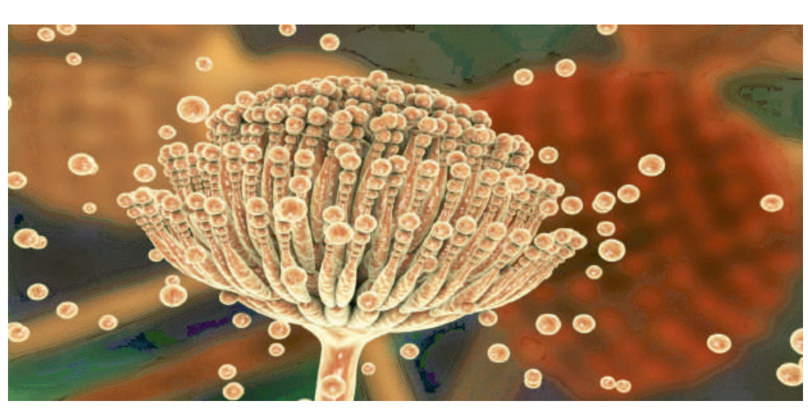

यह खतरनाक फंगस भारत में भी पाया जाता है। अमेरिकी नेशनल लाइब्रेरी आफ मेडिसिन की 2022 की रिपोर्ट की मानें तो उत्तर भारत में गेहूं की फसल में कई बार हेड ब्लास्ट के लक्षण देखे गये। हालांकि हर बार उस पर नियंत्रण पा लिया गया। इसके यहां सक्रिय होने के पीछे जलवायु परिवर्तन अहम कारण है। गेहूं की फसल के लिए इसे बड़ा खतरा माना जाता है। आईसीएआर के 2021 में हिमाचल और तमिलनाडु में किए व्यापक रोग-सर्वेक्षण में इस फंगस के बारे में खुलासा हुआ था। इससे गेहूं के दाने में हेड ब्लाइट या स्टैंड की समस्या हुई थी। यही नहीं 2021 और 2022 के बीच रबी सीजन में कर्नाटक कृषि विवि द्वारा किए एक सर्वे में कर्नाटक में हेड ब्लाइट की समस्या देखी गयी।

असल में अमेरिका में चीनी वैज्ञानिक द्वारा फ्यूजेरियम ग्रेमिनीअरम की तस्करी की घटना ने जहां वैश्विक कृषि सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं, वहीं चेतावनी भी दी है कि इस तरह मिट्टी, बीज और फसलें भी आतंकवाद के हथियार बन सकते हैं। फ्यूजेरियम ग्रेमिनीअरम फंगस अनाज को सड़ा भी सकता है जिससे इंसान व मवेशियों की जान के लाले पड़ सकते हैं। बेहद सूक्ष्म होने के चलते यह आसानी से पकड़ में नहीं आता और हवा, मिट्टी और बीज के जरिये अपना विस्तार करता है। इसके शुरुआत में लक्षण फसली रोग जैसे होते हैं। इंसानों में जब तक इसका पता चलता है तब तक बहुत देर हो जाती है। यह जैविक युद्ध का मौन हथियार साबित हो सकता है। वैज्ञानिक इसे 'एग्रो टैररिज्म' बता रहे हैं। फसलों को बर्बाद करने की खातिर जैविक एजेंट का इस्तेमाल कृषि आतंकवाद कहलाता है। जिसका मकसद अर्थव्यवस्था बर्बाद करना और समाज में भय-बिखराव का माहौल बनाना है।

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान लगभग 17 फीसदी से ज्यादा है और आधी से ज्यादा आबादी खेती से जुड़ी है, इसलिए भारत भी चीन के निशाने पर है। पंजाब, राजस्थान और हिमाचल राज्य चीन और पाकिस्तान से सटे हुए हैं और दोनों ही देश दुश्मन देश हैं। अब बांग्लादेश भी चीन-पाक की राह पर है। गौरतलब है कि 2016 में बांग्लादेश से ही भेजे गये जहरीले फंगस मैग्नपार्थ ओराइजा पाथोटायप ट्रिटिकम ने पश्चिम बंगाल के दो जिलों में तबाही मचाई थी। इस फंगस का जहर काफी ख़तरनाक है। यह मनुष्य के शरीर में दूषित भोजन (रोटी, अनाज, पास्ता, बीयर) से या प्रसंस्करण के दौरान, दूषित अनाज से धूल को सांस के माध्यम से त्वचा के संपर्क से प्रवेश करता है। मुख्यतः जठरांत्र और प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है। इसके शिकार शिशु, बच्चे और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग होते हैं। इसके असर से इंसान को उल्टी, दस्त, बुखार, हार्मोनल असंतुलन, प्रजनन संकट, त्वचा में जलन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। वहीं पशुओं का विकास बाधित हो सकता है।

भारत में कृषि अनुसंधान परिषद और कृषि विश्वविद्यालयों में फफूंदरोधी गेहूं की उन्नत किस्मों पर अध्ययन जारी है, रोग प्रतिरोधक बीजों का ट्रायल किया जा रहा है लेकिन इसके साथ-साथ जैविक सुरक्षा मानकों व दिशा-निर्देशों को सख्त बनाना, अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं से निरंतर सहयोग-परामर्श, मौसम पूर्वानुमान प्रणाली और फफूंद का निगरानी तंत्र विकसित किया जाना बेहद ज़रूरी है तभी कुछ सीमा तक इस पर नियंत्रण संभव है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

रणनीति की नई परिभाषा – सिंधु, सूरज और संकल्प

[शक्ति की नई परिभाषा : न तलवार, न तोप, सिर्फ जल और ऊर्जा]

जब भविष्य के पन्नों पर इस युग का ज़िक्र होगा, तो यह न तलवारों की धार, न ही सीमाओं की रेखाओं, बल्कि पानी की एक बूँद और ऊर्जा की एक किरण के लिए छिड़े युद्धों का युग कहलाएगा। तेल और गैस की भूख ने भले ही बीते दशकों में विश्व को युद्ध के मैदानों में धकेला, लेकिन अब जल और ऊर्जा की लड़ाई न केवल राष्ट्रों की शक्ति, बल्कि उनकी सभ्यता की नींव को परिभाषित कर रही है। भारत, जहां सवा अरब से अधिक लोग विकास की आकांक्षा और संसाधनों की कमी के बीच संतुलन साध रहे हैं, इस युद्ध का सबसे निर्णायक रणक्षेत्र है। सिंधु की धाराओं से लेकर ईरान की गैस पाइपलाइनों तक, यह संघर्ष केवल प्राकृतिक संसाधनों का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, कूटनीति और वैश्विक नेतृत्व का है। भारत अब उस मोड़ पर खड़ा है, जहां वह न केवल धारा के साथ बहेगा, बल्कि धारा को अपनी इच्छाशक्ति से मोड़ेगा।

सिंधु जल संधि, जो 1960 में भारत और पाकिस्तान के बीच शांति का स्वप्न लेकर आई थी, आज भारत के लिए एक रणनीतिक जकड़न बन चुकी है। विश्व बैंक की मध्यस्थता में बनी इस संधि में भारत ने अपनी नदियों का 80% पानी पाकिस्तान को सौंप दिया, लेकिन बदले में उसे आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दुष्प्रचार का सामना करना पड़ रहा है। ऑपरेशन सिंदूर, जिसने भारत की सैन्य शक्ति और आतंकवाद के खिलाफ दृढ़ता को दुनिया के सामने रखा, ने सिंधु नदी को भी एक नए कूटनीतिक हथियार के रूप में स्थापित किया। भारत ने इस संधि पर पुनर्विचार का संकेत देकर साफ कर दिया कि सिंधु की हर लहर अब केवल पानी की धारा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हितों की रीढ़ और कूटनीति का प्रतीक है। पाकिस्तान, जो अपने हिस्से के पानी का समुचित उपयोग करने में नाकाम रहा है, इस संधि को भारत के खिलाफ हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। जम्मू-कश्मीर में भारत की जलविद्युत परियोजनाओं पर उसकी आपत्तियां और विश्व बैंक में बार-बार शिकायतें उसकी दोहरी नीति को उजागर करती हैं। सिंधु अब भारत की रणनीतिक शक्ति का आधार है, और इसका उपयोग भारत अब अपनी शर्तों पर करेगा।

दूसरी ओर, ऊर्जा का संकट भारत को वैश्विक भू-राजनीति के सबसे जटिल और खतरनाक खेल में खींच रहा है। भारत की ऊर्जा मांग 2030 तक दोगुनी होने की संभावना है, लेकिन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की अनिश्चितता इसे जोखिम में डाल रही है। ईरान से प्रस्तावित गैस पाइपलाइन, जो कभी भारत की ऊर्जा सुरक्षा की आधारशिला बन सकती थी, अब पश्चिमी प्रतिबंधों और पश्चिम एशिया की अस्थिरता के कारण अधर में लटकी है। रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक गैस कीमतों को बेकाबू कर दिया, और ओपेक देशों की अनिश्चित नीतियां भारत जैसे आयात-निर्भर देशों के लिए खतरे की घंटी बजा रही हैं। ऐसे में भारत ने सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन और लिथियम जैसे भविष्य के संसाधनों पर अपनी नजरें टिका दी हैं। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और जी-20 में भारत का नेतृत्व न केवल उसकी तकनीकी प्रगति, बल्कि उसकी भू-राजनीतिक दूरदर्शिता को भी दर्शाता है। यह केवल ऊर्जा का सवाल नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और वैश्विक मंच पर भारत की साख का है।

यह युद्ध केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं है। चीन का ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध निर्माण भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए एक सीधा खतरा है। ये बांध न केवल पानी की उपलब्धता को प्रभावित करते हैं, बल्कि बाढ़ और सूखे जैसे पर्यावरणीय संकटों को भी जन्म दे सकते हैं। पाकिस्तान, जो सिंधु के पानी का प्रबंधन करने में असमर्थ रहा है, इसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के खिलाफ हथियार बनाता है। जल और ऊर्जा अब केवल संसाधन नहीं, बल्कि वैश्विक कूटनीति, रणनीति और शक्ति संतुलन के नए आयाम हैं। भारत, जो विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, इस युद्ध में न केवल एक खिलाड़ी, बल्कि एक निर्णायक शक्ति बनकर उभर रहा है।

भारत की भूमिका अब केवल एक उपभोक्ता की नहीं, बल्कि एक नीति-निर्माता और उत्पादक की है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के जरिए भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्व की राह पकड़ी है। हरित हाइड्रोजन और लिथियम जैसे संसाधनों पर उसका जोर भविष्य की ऊर्जा क्रांति का आधार बन रहा है। साथ ही, ऑपरेशन सिंदूर के बाद सिंधु जल संधि पर भारत का पुनर्विचार का रुख केवल पाकिस्तान पर दबाव का साधन नहीं, बल्कि एक वैश्विक संदेश है—भारत अब अपने संसाधनों को लेकर नरम रुख नहीं अपनाएगा। यह रणनीति भारत की उस सोच को रेखांकित करती है, जहां जल और ऊर्जा राष्ट्रीय सुरक्षा और कूटनीति के अभिन्न अंग हैं। भारत का यह कदम दुनिया को यह भी बताता है कि वह अब संसाधनों के प्रबंधन में केवल अनुयायी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता बनना चाहता है।

यह संकट केवल भविष्य का नहीं, बल्कि आज का है। भारत के कई हिस्सों में भूजल स्तर खतरनाक रूप से नीचे जा रहा है। सूखा और बाढ़ जैसी आपदाएं लाखों लोगों की आजीविका को प्रभावित कर रही हैं। ऊर्जा की बढ़ती मांग और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता भारत को जोखिम में डाल रही है। ये चुनौतियां केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और रणनीतिक हैं। जल और ऊर्जा अब केवल विकास के साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शक्ति और वैश्विक संतुलन के आधार हैं। जो देश इन संसाधनों को नियंत्रित और प्रबंधित करने में सक्षम होंगे, वही भविष्य के वैश्विक मंच पर नेतृत्व करेंगे।

इसलिए भारत को अब न केवल प्रतिक्रियात्मक, बल्कि सक्रिय और आक्रामक रणनीतियां अपनानी होंगी। जल और ऊर्जा को केवल संसाधन नहीं, बल्कि रणनीतिक संपत्ति के रूप में देखना होगा। सिंधु की धाराएं और गैस की पाइपलाइनें अब कूटनीति और शक्ति के प्रतीक हैं। भारत को अपनी ऊर्जा आत्मनिर्भरता के लिए नवीकरणीय स्रोतों पर ध्यान देना होगा, साथ ही जल संरक्षण और प्रबंधन में अभूतपूर्व कदम उठाने होंगे। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को अपनी बात मजबूती से रखनी होगी, चाहे वह सिंधु जल संधि हो या जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक सहमति। भारत को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, तकनीकी नवाचार और कूटनीतिक चतुराई का उपयोग करना होगा ताकि जल और ऊर्जा के संकट को अवसर में बदला जा सके।

यह समय भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। सिंधु की हर लहर और हर सौर पैनल अब भारत की शक्ति का प्रतीक बनना चाहिए। ऑपरेशन सिंदूर ने दुनिया को भारत की दृढ़ता दिखाई, और अब सिंधु की धाराएं भारत की कूटनीतिक शक्ति को परिभाषित करेंगी। यह वह युग है, जहां भारत न केवल धारा के साथ बहेगा, बल्कि धारा को अपनी दिशा देगा। जल और ऊर्जा की यह लड़ाई केवल संसाधनों की नहीं, बल्कि भारत के भविष्य की है। भारत अब इस मोड़ पर खड़ा है, जहां वह न केवल एक भागीदार, बल्कि एक नेतृत्वकर्ता बनकर उभरेगा। यह समय है कि भारत इस नई भूमिका को न केवल स्वीकार करे, बल्कि इसे पूरी शक्ति के साथ अपनाए। जल और ऊर्जा का यह युद्ध भारत का भविष्य तय करेगा, और भारत तैयार है इस युद्ध को जीतने के लिए—न केवल अपने लिए, बल्कि एक ऐसी दुनिया के लिए, जहां संसाधन शांति, समृद्धि और नेतृत्व का आधार बनें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

संत शिरोमणि संत कबीर दास जी की जयंती धूमधाम से मनाई

संत शिरोमणि संत कबीर दास जी की जयंती के अवसर पर कामी रोड मुरथल बाई पास पर स्थित संत मोनी बाबा वाले आश्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से सैकड़ों नागरिकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई तथा प्रसाद ग्रहण किया मोनी बाबा एवं गीता माई की उपस्थिति में कानूनी सेवक संदीप बत्रा के द्वारा सभी नागरिकों को जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत की कार्य प्रणाली के साथ साथ ए डी आर सेंटर का पता फोन नंबर एवं राष्ट्रीय स्तर का हेल्प लाइन नंबर की जानकारी दी गई इस दौरान सड़क दुर्घटनाओं में रोकथाम एवं जागरुकता पैदा करने में सहयोग के लिए नागरिकों से अपील भी की गई ताकि भविष्य में अपने परिवार समाज एवं राष्ट्र की स्थिति में सुधार लाया जा सके इस अवसर पर सोनीपत जिले के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा अन्य स्थानों से भी सैकड़ों लोगों द्वारा संत शिरोमणि कबीर दास जी के चरणों में हाज़िरी लगाई।

किसी भी हालात में परमात्म-कृपा हमारे लिए शुभ ही होता है। क्योंकि वह स्वयं प्रेममय करुणा की मूर्ति हैं।

हमें यह लग सकता है कि संसार में बहुत कष्ट सहना पड़ता है लेकिन जीव/आत्म-अशुद्धि को दूर करने के लिए, मांजने/मंझने की प्रक्रिया से तो सभी को गुजरना ही पड़ेगा। यह हमारे छोटे-छोटे दुख उसी मंझने/मांझने का हिस्सा हैं। जीवन-मुक्ति के कठिन मार्ग को सुगम बनाने के लिए बीच-बीच में छोटे-छोटे दु:खों का आना और प्रभु-प्रसाद/आशीष से निकल जाना, हमारे जीवन मार्ग में हमारी क्षमता ही निखारते हैं, यद्यपि हम इसे कष्ट समझते हैं। अस्तित्व/परमात्म को अपना हितैषी जानकर, उनकी कृपा-हस्त को अपने सिर पर अनुभव करते हुए प्रत्येक कर्म करने से हमारा यह जीवन बहुत सरल हो जाता है।

हाय रे मेरी किस्मत! पेंड्रा की वो भालू वाली ट्रेनिंग

संजय सोंधी उप सचिव भूमि एवं भवन विभाग दिल्ली सरकार

लगभग 14 साल पहले की बात है, जब मैं बिलासपुर के पास एक गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल में लेक्चरर था। जिंदगी में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, सिवाय इसके कि सरकार को हर साल हमें "इन-सर्विस ट्रेनिंग" के नाम पर तंग करने का शौक था। बस, उसी शौक के चलते मुझे पेंड्रा भेज दिया गया, बिलासपुर से करीब 110 किलोमीटर दूर, जहां डाइट (जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान) में पांच दिन की ट्रेनिंग थी। अरे, पांच दिन क्या, पांच जन्मों की सजा लग रही थी!

पेंड्रा, यार, वो जगह जो मरवाही डिवीजन में आती है। अब मरवाही का जंगल सुनने में तो बड़ा रोमांटिक लगता है, लेकिन वहां भालुओं की ऐसी भरमार है कि लगता है इंसान वहां मेहमान हैं और भालू मालिक! वहां भालू का शहर में घुस आना वैसा ही आम था, जैसे हमारे मोहल्ले में कुत्ते का भौंकना। कोई नई बात नहीं। लेकिन उस ट्रेनिंग के दौरान जो हुआ, वो तो मेरी जिंदगी का सबसे मसालेदार किस्सा बन गया।

तो हुआ यूं कि ट्रेनिंग का दूसरा या तीसरा दिन था। रात को हम सब डाइट के हॉस्टल में खर्राटे मार रहे थे। लेकिन एक भालू भाई, जो शायद जंगल के सबसे उत्साही प्राणी थे, ने सोचा, ₹क्यों ना आज रात कुछ स्पेशल किया जाए?₹ बस, वो रात के अंधेरे में एक पेड़ पर चढ़ गए और वहां मधुमक्खियों का छत्ता देखकर उनकी आत्मा तृप्त हो गई। भालू भाई ने छत्ते से शहद चूसना शुरू किया और ऐसा चूसना शुरू किया कि जैसे कोई फ्री का बुफे मिल गया हो। अब भालू को तो रात में पेड़ से उतरकर जंगल में वापस जाना था, लेकिन शहद का लालच ऐसा कि सुबह हो गई और वो वही पेड़ पर जमे रहे, शहद चटकारे ले-लेकर खाते हुए।

सुबह-सुबह कुछ स्थानीय लोग, जो शायद सुबह की सैर पर निकले थे, ने उस भालू को पेड़ पर देख लिया। अब हमारे देश में भीड़ का दिमाग तो आप जानते ही हैं। किसी ने कहा, ₹अरे, भालू है! इसे भगाओ!₹ और किसी जीनियस ने तुरंत सुझाव दिया, ₹चलो, टायर जलाते हैं!₹ बस, फिर क्या था? लोगों ने पेड़ के नीचे पुराने टायर और ट्यूब इकट्ठा किए और आग लगा दी। धुआं, बदबू, और हंगामा! बेचारा भालू, जो शहद के नशे में मस्त था, अब धुएं में फंस गया। नीचे आग, ऊपर शहद, और बीच में भालू भाई की फटी पड़ी थी।

अब किसी समझदार ने फॉरेस्ट डिपार्टमेंट को खबर कर दी। फॉरेस्ट वाले आए, बड़े साहब बनकर। रस्सियां, जाल, और न जाने क्या-क्या लेकर भालू को पेड़ से उतारा। अब उतारने के बाद भालू को सीधे बिलासपुर के पास कनन पेंडारी जू भेज दिया गया। हां, वही जू, जहां जानवरों को ₹सरकारी नौकरी₹ मिलती है! अब वो भालू भाई सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक पिंजरे में टहल-टहलकर अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं। शहद का लालच और वो एक रात की मौज ने उनकी आजादी छीन ली।

तो भैया, इस कहानी का सबक ये है कि लालच बुरी बला है। शहद के चक्कर में भालू की जिंदगी जू में गुजर रही है। मैं अच्छी तरह समझ गया कि लालच बहुत बुरी बला है, पेंड्रा की वो ट्रेनिंग? वो तो बस एक बहाना था, असली मसाला तो भालू भाई ने दिया!

(यह संस्मरण एक सच्ची घटना पर आधारित है)

मुख्यमंत्री ने नए डीसीपी कार्यालय का उद्घाटन किया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: पिछले एक साल में राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति में बदलाव आया है। पुलिस निष्पक्ष और कानून के अनुसार कार्रवाई कर रही है। केंद्र सरकार ने भी इस पर संतोष व्यक्त किया है, ऐसा मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने आज भुवनेश्वर के बनिबिहार में नए डीसीपी कार्यालय का उद्घाटन करते हुए कहा।मुख्यमंत्री ने कहा कि 7.8 करोड़ रुपये की लागत से 2272 वर्ग मीटर क्षेत्र में निर्मित इस नए चार मंजिला भवन में साइबर सेल, सीसीटीएनएस कक्ष, एकीकृत नियंत्रण कक्ष, लीगल सेल, पासपोर्ट विभाग आदि हैं। इसमें कॉन्फ्रेंस रूम, प्रशिक्षण हॉल, दिव्यांगों के लिए रैंप की सुविधा भी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह नया भवन पुलिस प्रशासन के लिए लोगों को समय पर सेवाएं कुशलतापूर्वक प्रदान करने के लिए उपयोगी होगा। इसी तरह, हर थाने में काम करने वाले जांच अधिकारियों को और अधिक कुशल बनाने के लिए अधिक दोपहिया वाहनों की व्यवस्था की गई है। आज कमिश्नरेट पुलिस के विभिन्न थानों के जांच अधिकारियों को 425 दोपहिया वाहन प्रदान किए गए हैं। इसके अलावा, पुलिस थानों को और चार पहिया वाहनों की व्यवस्था भी की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपराधिक जांच प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के लिए सभी प्रकार का सहयोग प्रदान किया जाएगा। उद्घाटन समारोह में एकामरा विधायक बाबू सिंह, सेंट्रल विधायक अनंत नारायण जेना, उत्तर विधायक सुशांत कुमार राउत, मेयर सुलोचना दास, मुख्यमंत्री के सलाहकार प्रकाश मिश्रा, पुलिस महानिदेशक वाईबी खुरानिया, पुलिस आयुक्त सुरेश देवदत्त सिंह, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त नरसिंह भोला, डीसीपी जगमोहन मीना और कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

ख़ुद को बेहतरीन साबित करने की रविश। (प्रवृत्ति)

आज की मुकाबला-आम दुनिया में हर शख़्स आगे बढ़ना चाहता है। ये फितरी भी है, लेकिन जब ये जज़्बा इतना तेज़ हो जाता है कि हम दूसरों के एहसासात, ज़रूरतों और उनके किरदार को नजरअंदाज करने लगते हैं, तो ये दुरुस्त नहीं। इससे समाज में आपसी तआवुन, एहतराम और हम-आहंगी की फिज़ा कम हो जाती है।

जब हम सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हैं, तो हमारे ताल्लुक़ात में दरार आ सकती है। हर काम में टीम वर्क ज़रूरी है। दूसरों को नजरअंदाज करने से टीम की यकजहती और कारगुज़ारी पर असर पड़ता है।

ऐसी रविश से काम की जगह या समाज में मनफ़ी फिज़ा पैदा होती है। हमें दूसरों के ख़यालात और किरदार का एहतराम करना चाहिए। मुकाबला हो, लेकिन सेहतमंद और मुसबत हो। दूसरों की बातों को ग़ौर से सुनना और समझना चाहिए।

जब हम मिलकर आगे बढ़ते हैं, तो कामयाबी भी ज़्यादा लुत्फ़अंदोज़ होती है।

बेहतरीन बनने की ख्वाहिश अच्छी है, लेकिन दूसरों को नजरअंदाज करना दुरुस्त नहीं। हमें अपने साथ-साथ दूसरों की भी कद्र करनी चाहिए, तभी समाज में असली तरक्की और खुशहाली मुमकिन है।

₹कामयाब वही है, जो अपने साथ-साथ दूसरों को भी आगे बढ़ने का मौका दे!₹

दूसरों के लिए एहतराम बढ़ाने के लिए अपने रवैये में तब्दीली लाने के चंद अमली तरीके।

हमेशा दूसरों से इनक्सारी और रहमदिल्ली से पेश आएं। आपकी इनक्सारी ही आपको एहतराम दिलाएगी।

जब कोई बात करे, ग़ौर से सुनें। इससे सामने वाले को अहमियत और एहतराम मिलता है।

दूसरों को अपना समझकर, उनके भले का ख्याल रखते हुए बे-लौस रवैया अपनाएं।

सलाम और अदब भी ज़रूरी है—बड़ों को सलाम करें, छोटों को मोहब्बत दें, और सब से तहज़ीब से पेश आएं।

बार-बार गुस्सा करने से लोग आपसे दूर हो सकते हैं, इसलिए पुर-सुकून और मुसबत रहें।

ज़रूरतमंदों की मदद करना आपके लिए एहतराम बढ़ाता है।

ख़ुद्दारी का ख़ास ख्याल रखें, ख़ुद का एहतराम करें, तभी आप दूसरों का भी एहतराम कर सकेंगे।

इन आदतों को अपनाकर आप अपने रवैये में मुसबत तब्दीली ला सकते हैं और दूसरों के लिए एहतराम बढ़ा सकते हैं।एहतराम (Self-Respect) क्या है?

एहतराम यानी—ख़ुद के लिए वो एहसास, जिसमें आप अपनी सलाहियत, सोच और वजूद को अहमियत देते हैं। ये बाहर से मिलने वाली इज़्ज़त से अलग है; ये आपके अपने अंदर से पैदा होती है।

आपका एहतराम आपके हाथ में क्यों है?

आपका रवैया, आप दूसरों के साथ जैसा सलूक करते हैं, वैसा ही सलूक वो आपके साथ करते हैं।

अगर आप ख़ुद को कम समझेंगे, तो लोग भी आपको कम समझेंगे।

अपनी हदें (Boundaries) ख़ुद तय करें। किसी को भी अपने एहतराम को ठेस पहुँचाने की इजाज़त न दें।

जब ज़रूरी हो, बे-झिझक 'ना' कहना सीखें। इससे लोग आपकी तरजीहात और एहतराम को समझेंगे।

अपनी खूबियों और कमज़ोरियों को कबूल करें। जब आप ख़ुद को अपनाते हैं, तो दूसरों की राय आपके एहतराम को मुतास्सिर नहीं कर पाती।

अपनी छोटी-बड़ी कामयाबियों को पहचानें और ख़ुद को शाबाशी दें। इससे एतमाद और एहतराम दोनों बढ़ते हैं।

दूसरों की बातों से कभी न डरें और न आहत होंलोग क्या कहेंगे, इस डर से अपने असूलों से समझौता न करें। अपनी सच्चाई और ईमानदारी को तरजीह दें।

हर इंसान गलतियां करता है। अपनी गलतियों को कबूल करें, उनसे सीखें, मगर ख़ुद को कमतर न समझें।

एहतराम बाहर से नहीं, अंदर से आता है। अगर आप ख़ुद को इज़्ज़त देंगे, तो दुनिया भी आपको इज़्ज़त देगी।

आपका एहतराम आपके ख़यालात, फैसलों, रवैये और एतमाद में छुपा है।₹दूसरे आपको तभी इज़्ज़त देंगे, जब आप ख़ुद अपनी इज़्ज़त करेंगे।"

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज, हरदा, मध्य प्रदेश

नदौलिया में घटिया सामग्री व पीला ईट से हो रहा नाली निर्माण, जिम्मेदार मौन बदायूं जिले के बिनावर क्षेत्र में....

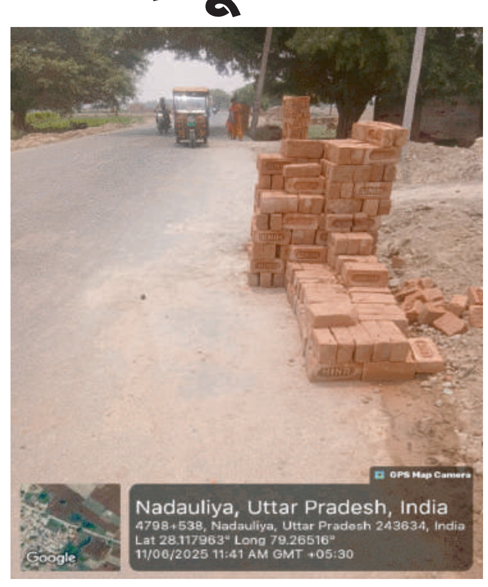

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर: मानकों की अनदेखी और भ्रष्टाचार का नजारा देखना है तो कही जाने की जरूरत नहीं है। इसके लिए बस जिले की बदायूं तहसील अंतर्गत विकासखंड सालारपुर क्षेत्र की ग्राम पंचायत बिलहैत के मजरा नदौलिया में ही जाना होगा। जहां बिलहैत पीडब्ल्यूडी रोड किनारे कराए जा रहे नाली निर्माण में जमकर मानकों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। खुलेआम पीली ईट व घटिया किस्म के बने मसालों से नाली निर्माण किया जा रहा है। जिम्मेदार मामले से अनजान बने हुए है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023